जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२७ अंक -९ मई २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४४ मूल्य - १५० रूपए प्रति

हम सब जैन हैं श्वेताम्बर जैन दिगम्बर हम सब जैन हैं

!! ॐ अर्हम् !!

जय भिक्षु

जय तुलसी

जय महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन

आचार्य महाश्रमण जी के ६४वें जन्म दिवस पर कोटि-कोटि वंदन

Suresh Raj Jaskanwar Surana

ADVANCE PANELS & SWITCHGEARS (P) LTD.

Unit 1: A-257, DSIDC, Narela Industrial Park, Narela, New Delhi-110040,
Factory 2: SIDCUL, Haridwar, Factory 3: Sonepat, Haryana (www.advancepanels.com)
Offices : Delhi, Noida, Gurgaon, Dehradun, Jaipur, Ahmedabad, Mumbai, Pune, Bengaluru, Chennai)
(46 years old India's leading manufacturer of HT, LT & Control Panels like 33 kV, 11 kV, PCC, MCC, MDB, VFD & Soft Starters, Draw-out panels, iMCC, APFC & Hybrid solution, PLC & SCADA s, DB's, sandwich bus ducts, rising mains, cable trays, raceways.
EPC Solutions: 11KV/33KV/66KV Switchyard, sub station, external & internal electrical contracts, MEP contracts.
Contact us : marketing@advancepanels.com, customercare@advancepanels.com,
Mob. : 9350290804, 8377000515

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनिः ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

परस्परोपग्रहो जीवानाम

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

Motivated By

द्वारा आयोजित

भारत के नायकों को हमारा प्रणाम
सम्मान उनका, जो हमारे समाज के नायक हैं

इसी भाव के साथ

युगांतर Exhibition

Showcase Your Brand at Kolkata's Premium Lifestyle Exhibition

निवेदक

राष्ट्रीय अध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई
मो. 9322307908

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9830224300

पद्मश्री व प्रसिद्ध भजन गायक
अनुप जलोटा, मुंबई
मो. 9821069089

राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक
दिलिप सेन, मुंबई
मो. 93228 66476

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
वर्षा मूंधड़ा, कोलकाता
मो. 9874272916

पूर्वांचल उपसभापति
सुशीला पुगलिया, कोलकाता
मो. 8617203712

उपाध्यक्ष
कांता गगरानी, आगरा
मो. 9837888088

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
रवि जैन, मुंबई
मो. 8108843571

उत्तरांचल उप सभापति
पूरण डावर, आगरा
मो. 9837065440

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका
मो. 01(919)610-7106

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
किशोर जैन, लंदन, यूके
मो. 044 (770) 3827595

12th & 13th July 2025

Salt Lake,Royal Bengal Room, City Centre 1

For booking stalls contact
Nisha Laddha 9830224300
Varsha Mundhra 9874272916

'एक राष्ट्र-एक नाम 'BHARAT'

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-	+ 5% GST

* Per Insertion

अगला अंक

जैन एकता

!! ॐ अर्हम् !!

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर
अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के
जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

Rakesh Chhajer
Mob: 9899064175

Ankit Chhajer
Mob: 9999600499

PARAS
computer & peripherals
SOLUTION FOR A SMALL PLANET

301, Kusal Bazar, 32-33, Nehru Place, New Delhi - 110019

Email: parascomputerperiphearls@gmail.com

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

Late Hansraj Choraria Late Bijaya Devi Choraria

Narpat - Indira Devi Choraria
Sunil - Kusum Choraria
Rahul - Purwa Choraria
Jyoti - Dattu Choraria
Prashant - Vartika Choraria

Sajjan Devi Singhi
Sushila Devi - Sampatraj Doshi
Pushpa Devi - Dalamchand Chajjer
Santosh - Bimal Bothra
Chetna - Manish Baid
Payal - Vishal Bothra

Vivaan, Devya, Atharva, Agastya

Dhanvika,Devanshi,Vyom, Vedansh,Sanvi

With best compliments from:

Narpat Singh Sunil Kumar Choraria

Sujangarh / Bangalore

P C FARM

#209, EMBASSY CENTRE, #11, CRESCENT ROAD, BENGALURU - 560 001

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

२८ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२७, अंक ९, मई २०२५

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिनागम
सकल जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: ९७०२२ ०५२५२

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ○ **सम्पादकीय** ○ दिगम्बर श्वेताम्बर

प्रधानमंत्री मोदी का निर्णय सम्माननीय

समस्त जैन पंथों की घोषित विश्वस्तरीय सम्माननीय 'जिनागम' पत्रिका के संपादकीय में आज क्या लिखने बैठ गया? तो बताता हूँ, 'जिनागम' पत्रिका का दूर-दूर तक राजनीति से कोई संपर्क नहीं है पर चक्रवर्ती सम्राट भरत के 'भारत' से तो पूरा संपर्क है, हम जैन 'भारत' के निवासी हैं, भारत हमारा है, अहिंसामयी 'भारत' का एक प्रदेश कश्मीर के 'पहलगाम' में हुई हिंसा की निंदा ही नहीं भर्त्सना भी करता है 'जिनागम' परिवार, क्योंकि हम भारतीय सर्वप्रथम अहिंसा प्रेमी हैं, इसका मतलब यह नहीं की कोई भी हम पर आक्रमण करे और हम चुप बैठे रहें? हम २४ तीर्थंकरों के अनुयायी जरूर हैं, सभी तीर्थंकरों ने हमें अहिंसा का पाठ ही पढ़ाया है, पर हम पर कोई वार करे और ऐसा घातक वार की हमारी जान ही चली जाए तो हमें अपनी जान बचाने के लिए शास्त्र की जगह शस्त्र उठाना भी बताया गया है।

'भारत' के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जिस प्रकार 'ऑपरेशन सिंदूर' की घोषणा की और आतंकवाद के शामियाने को नेस्तनाबूद करने का जो निर्णय लिया वह सम्माननीय है। 'भारत' के विभिन्न सोच वाले भारतीयों का यह भी कहना है कि मरे हुए को क्यों मारना, पर मरा हुआ यदि सांप की तरह डसनेवाला खतरनाक बन जाये तो उसका खात्मा करना ही चाहिए, ऐसा निर्णय आतंकवाद के विरुद्ध निर्णय जो मोदी जी ने लिया है वो जरूरी था। मैं विश्व में फैले जैन पंथावलंबियों से यही निवेदन करता हूं कि अपना ख्याल रखते हुए भारत सरकार के निर्णय का सम्मान शांतिपूर्वक करें, 'भारत' रहेगा तो हम रहेंगे और हमें मिलकर 'भारत' को विश्व के मानचित्र में शक्तिशाली स्वरुप देखना है।

'जिनागम' का प्रस्तुत अंक जैन धर्म के दो पंथ दिगम्बर व श्वेताम्बर के आचार्य श्री पुलक सागर जी (११ मई) व आचार्य श्री महाश्रमण जी (१३ मई) अंग्रेजी तिथि के अनुसार) जीवन परिचय, संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने का सौभाग्य 'जिनागम' परिवार को मिला है, जिसे पढ़कर मार्गदर्शन दें और जहां के भी आप निवासी हैं, वहां से हमारे गुरुवर के शतायु होने के मंगलकामना २४ तीर्थंकरों से करें, ताकि हमें हमारे गुरुवर का सानिध्य प्राप्त होता रहे और हम अहिंसामयी बन रहें और 'जैन एकता' अभियान में सफलता के सहभागी बनें।

जय जिनेंद्र! जय भारत!

SBI
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

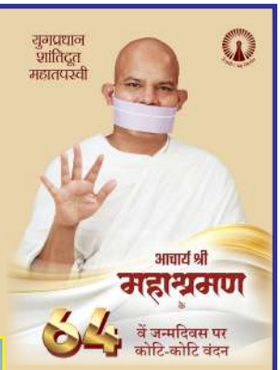

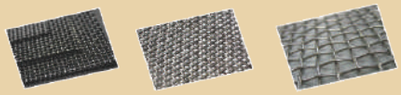

Madan Lal Bothra & Piyush Bothra
Mob. : 98451 81122 / 98868 51911

Since 1975

Jain Wire Netting Stores

ONE STOP SHOP FOR ALL TYPES OF MESH & WIRE PRODUCTS

11, Silver Jubilee Park Road, (SJP Road), Bangalore - 560 002 Ph. : +91-80-2222 4750, 4151 3950, 4163 4105
website : www.jainwirenetting.com e-mail : jwnsblr@gmail.com

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६४वें जन्म पर्व पर शत् शत् नमन

नवरत्न कुमुद बच्छावत

DJ BROTHERS

Admin Offfice: No. 307, Bhanwar Apt., 10th Cross,
Near Adagi Hospital, Wilson Garden,
Bangalore, Karnataka, Bharat-560027

Head Offfice: Plot No.33, INDIA FOOD PARK, KIADB
Industrial Area, Vasanthanarasapura, 3rd Phase, Kora Hobli,
Tumkur District, Bangalore, Karanataka, Bharat- 572139

जैन एकता' से ही जैन समाज का
विकास व सम्मान बढ़ेगा मिल कर कहें
हम-सब जैन हैं

PTM

Jatan Singh Mehta
Mob.: 9422049225

Ratan Singh Mehta
Mob.: 9414008998

Pankaj Mehta
Mob.: 8155016504

PANKAJ TEXTILE MILLS
PANKAJ SYNTHETIC MILLS

Mfg of Export Quality Bottoms & Denium, Shirting, Loan Cloth, Pocketing And all other Fabrics

5/586, 'Pankaj' Bunglow, Near Lions Club, Ichalkaranji,
Dist-Kolhapur, Maharashtra, Bharat- 416115
Email pankajsynthetics09©gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

षष्टिपूर्ति
जन्म पर्व

तेरापंथाचार्य महाश्रमण जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म	: वि.सं. २०१९, वैशाख शुक्ला नवमी (१३ मई १९६२) सरदारशहर
जन्म नाम	: मोहनलाल दुगड़
पिता	: स्व श्री झूमरमलजी दुगड़
माता	: स्व. श्रीमती नेमादेवी दुगड़
दीक्षा	: वि.सं.२०३१ वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (५ मई १९७४) सरदारशहर (आचार्य तुलसी की अनुज्ञा से मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' द्वारा)
अन्तरंग सहयोगी	: वि.सं. २०४२, माघ शुक्ला सप्तमी (१६ फरवरी १९८६) उदयपुर में
सांझपति	: वि.सं. २०४३, वैशाख शुक्ला चतुर्थी (१३ मई १९८६) ब्यावर में
महाश्रमण पद	: वि.सं. २०४६, भाद्रव शुक्ला नवमी (९ सितम्बर १९८९) लाडनूं में
युवाचार्य पद	: वि.सं. २०५४, भाद्रव शुक्ला द्वादशी (१४ सितम्बर १९९७) गंगाशहर में
आचार्य पदाभिषेक	: वि.सं.२०६७, द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी (२३ मई २०१०) सरदारशहर में
महातपस्वी	: वि.सं. २०६४, भाद्रपद शुक्ला पंचमी (१७ सितम्बर २००७) उदयपुर में
शान्तिदूत	: वि.सं. २०६८, ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी (२९ मई २०११) उदयपुर में
श्रमण संस्कृति उद्गाता	: वि.सं.२०६९, आश्विन कृष्णा चतुदर्शी (१४ अक्टूबर २०१२) जसोल में
अहिंसा यात्रा शुभारम्भ	: वि.सं. २०७१, मार्गशीर्ष बदी तृतीया (९ नवम्बर २०१४) दिल्ली से
प्रथम विदेश यात्रा	: वि.सं.२०७२, चैत्र शुक्ला एकादशी (३१ मार्च २०१५) वीरगंज (नेपाल)
प्रकाशित पुस्तकें	: आओ हम जीना सीखें, दुःख मुक्ति का मार्ग, क्या कहता है जैन वाङ्मय, संवाद भगवान से (भाग-१, २), शिक्षा सुधा, शेमुषी, मेरे गीत,धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो-संपन्न बनो-विजयी बनो, रोज की एक सलाह, शिलान्यास धर्म का, अदृश्य हो गया महासूर्य....

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

भारत गौरव मनोज्ञाचार्य श्री पुलक सागर जी के जन्म दिवस पर कोटि-कोटि वंदन

परम पूज्य भारत गौरव
आचार्य श्री पुलकसागर जी महाराज

परस्परोपग्रहो जीवानाम

मेवाड़ केटर्स

पं. मधुकान्त जोशी
(व्यवस्थापक)

म.नं. 21, सखवाल नगर (रंगकारखाना) राम मंदिर, रतलाम (म.प्र.)
मो. 9981888980, 9425355761, 07412-235232

Best Food | Super Vision | Catering Service

मंदिर, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव तथा अन्य मांगलिक उत्सवों पर शुद्ध सात्विक भोजन बनाने की सम्पूर्ण व्यवस्था

भारत गौरव मनोज्ञाचार्य श्री पुलक सागर जी के जन्म दिवस पर कोटि-कोटि वंदन

श्रद्धेय स्वामी देवेन्द्र भाई

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आचार्य पुलक सागर जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

नाम	: श्री पुलक सागर जी महाराज
दीक्षा से पहले का नाम	: पारस जैन
जन्म तिथि	: ११ मई, १९७०
जन्म स्थान	: धमत्री, छत्तीसगढ़
पिता का नाम	: स्वर्गीय भीकमचंद जैन
मां का नाम	: श्रीमती गोपी बाई जैन
शैक्षिक योग्यता	: कला स्नातक (जबलपुर)
ब्रह्मचर्य व्रत (गृह त्याग)	: २७ जनवरी,१९९३
ब्रह्मचर्य	: आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज
ऐलक दीक्षा	: २७ जनवरी,१९९४
दीक्षा का स्थान	: ग्वालियर, मध्य प्रदेश
मुनि दीक्षा	: ११ दिसम्बर, १९९५
दीक्षा का स्थान	: कानपुर, उत्तर प्रदेश
दीक्षा गुरु	: आचार्य पुष्पदंत सागर जी महाराज साहेब

चातुर्मास : मेरठ, भोलानाथ नगर, सहारनपुर, नवीन शाहदरा, आगरा, ग्वालियर, जयपुर, इंदौर, नागपुर, मुंबई, भीलवाड़ा

आचार्य पुलक सागर जी - छत्तीसगढ़ के एक बहुत छोटे लेकिन भाग्यशाली गांव धमतरी में एक दिव्य आत्मा का जन्म हुआ, यह आत्मा कोई और नहीं बल्कि मुनि पुलक सागर जी महाराज थे, जन्म से इस बालक के माता-पिता श्री भीकमचंद जी और श्रीमती गोपी बाई जैन के घर में सुख, संपत्ति, सम्मान और शांति आई। दीक्षा से पहले उनका नाम उनकी आत्मा की तरह ही पारस था, जिसका अर्थ होता है पवित्र। जैन धर्म के सच्चे अनुयायी और तीर्थंकर पार्श्वनाथ के भक्त ने श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज के मार्गदर्शन में मानवता की सेवा की और जैन धर्म का प्रचार किया।

छत्तीसगढ़ के एक धार्मिक जैन परिवार, जिन्होंने अपना जीवन पूरी लगन और निष्ठा के साथ जैन धर्म का पालन करते हुए ११ मई १९७० को एक बच्चे का जन्म हुआ, जिसका नाम पारस रखा गया। पूरा परिवार बच्चे के जन्म का जश्न मना रहा था, भगवान का शुक्रिया अदा करने के लिए परिवार ने जैन तीर्थों, जैन मंदिरों का दौरा किया। श्री भीकम चंद जी पारस के भविष्य के बारे में जानने के लिए पारिवारिक पंडित के पास गए। वे पारस के भविष्य के बारे में जानकर अभिभूत हो गए और उन्हें बताया कि पारस कोई साधारण बच्चा नहीं है और वह एक महान संत होगा, जो अध्यात्म का प्रकाश दिखाएगा।

बचपन में पारस का झुकाव धार्मिक महाकाव्यों की ओर था, कई अन्य महान संतों के माता-पिता की तरह पारस के माता-पिता भी पवित्रता, कुलीनता और शिक्षकों और संतों के प्रति अत्यधिक श्रद्धा से जगमगाते हृदय से सुशोभित थे। पारस अपनी माँ और दादी से जैन धर्मग्रंथों को बड़ी रुचि से सुनते थे, इस अवधि के दौरान उनके जीवन में आध्यात्मिक जीवन का पहला बीज बोया गया।

२३ वर्ष की अल्पायु में ही जब पारस समकालिक संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के संपर्क में आए, तो उनकी सत्य की खोज तीव्र हो गई। पारस भौतिकवादी संसार से विरक्त हो रहे थे, जो उन्हें अस्थिर सुख, दुख और शिकायतों के अलावा कुछ नहीं दे सकता। २७ जनवरी १९९३ को आचार्य विद्या सागर जी महाराज ने पारस की उंगली पकड़ी और उन्हें अध्यात्म की ओर पहला कदम बढ़ाने में मदद की और उन्हें ब्रह्मचर्य व्रत प्रदान किया।

पारस के दृढ़ निश्चय, सज्जनता, धार्मिक विचारों से आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज भी प्रभावित हुए और उन्होंने २७ जनवरी, १९९४ को ग्वालियर में उन्हें 'ऐलक दीक्षा' प्रदान की, इस शुभ दिन पर, उन्हें उनके सच्चे आध्यात्मिक उपहार - 'पिच्छी और कमंडल' प्राप्त हुए, बाद में कानपुर में भारी जनसमूह के समक्ष उन्हें मुनि दीक्षा प्रदान की गई और आचार्य श्री ने उनका नाम 'मुनि पुलक सागर' रखा। गुरु की कृपा और आशीर्वाद से मुनि श्री १०८ पुलक सागर जी ने परम सत्य की खोज की। पारस के जीवन का प्रत्येक क्षण अस्तित्व की दिव्य अनुभूति से भरा हुआ था। अभिमान और भौतिक आकर्षण से परे अंतिम गंतव्य की ओर उनका अभियान शुरू हो गया था। आनंद की स्थिति की यात्रा जहाँ कोई भी व्यक्ति को ईश्वर और धर्म से अलग नहीं कर सकता, आखिरकार शुरू हो गई।

मुनि श्री ने मानव जाति की सेवा करने के अपने आदर्श के साथ अज्ञानी, गैर-धार्मिक लोगों को जैन धर्म और विभिन्न जैन मान्यताओं का प्रचार करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करना शुरू किया, वे मेरठ (यूपी), भोलानाथ नगर (दिल्ली), सहारनपुर (यूपी), **शेष पृष्ठ १२ पर...**

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

With Best Compliments From

GIRIAS®
The Consumer Durable People
MOST TRUSTED HOUSE HOLD NAME SINCE 1971

SINCE 1971

175 MEGA SHOW ROOMS

ELECTRICAL AND ELECTRONICS CONSUMER DURABLE PEOPLE

Showrooms at

YELAHANKA
Rudreshwara Chambers
Yelahanka New Town
Sharavathi Hotel Building
Ph: 48504464

COLES PARK
No.41 (Park Grand)
St John's Chruch Road
Ph: 25362525

MATHIKERE
Opp. Ramaiah Kalyana
Mantapa, Gokula
(Near BEL Circle)
Ph: 23450101

KATHRIGUPPE
Kathriguppe Main Road
Diagonally Opp. Big Bazar
Banashankari
Ph: 9035499288

MARATHAHALLI
Outer Ring Road
(Opp. Home Town)
Ph: 90354 99011

BANNERGHATTA ROAD
NS Palya, BTM 2nd Stage
(Next To Shoppers Stop)
Ph: 2678 3030

BANASHANKARI
Ring Rd Iliyas Nagar
Near Sarakki Signal
Ph: 2671 5654

GANDHINAGAR
1st Main Road
Ph: 2220 4189

BRIGADE ROAD
138, Shoolay Circle
Ph: 2211 8871

MYSORE ROAD
Opp. Indian Oil Bunk
Ph: 2674 1227

HOSUR ROAD
Near Silk Board Flyover
Ph: 2572 4947

INDIRANAGAR
100 Ft Road
Ph: 2520 2880

HRBR LAYOUT
Opp. Kalyan Nagar
Bus Depot
Ph: 90354 99177

SADASHIVNAGAR
Opp.Cauvery Theatre
Circle
Ph: 2361 2745

JAYANAGAR
Opp. Dayanand
Sagar Mantap
Ph: 90354 99077

RAJAJINAGAR
Next to National Public
School, WOC Road
Ph: 2311 9237

BASAVANGUDI
"Chitra Court" Sankaramutt Vani
Vilas Junction, Vanivilas Road
Ph: 90354 99244

KORAMANGALA
80 Feet Road
Sony Junction
Ph: 9035411200

NAGARABHAVI
Ring Road
Near BDA Complex
Ph: 2318 6902

HOSUR
4,Prabhu Complex
Post Office Road
Ph: 04344 243633

BRANCHES: ✶ HUBLI: 90354 99155 ✶ MANGALORE: 90354 99211 ✶ MYSORE: 90354 99099 ✶ DAVANGERE: 9591987864 ✶ DHARWAD: 9591987863 ✶ CHENNAI: 044 26264233 ✶ COIMBATORE: 0422 2230615 ✶ SALEM: 0427 2330734 ✶ THIRUVALLUR: 044 27663299 ✶ POLLACHI: 04259 220031 ✶ HOSUR: 04344 243633 ✶ MADURAI: 0452 2343733 ✶ TIRUPPUR: 0421 2243633

BANGALORE H.O.
GIRIAS INVESTMENT PVT LTD
#47,3rd Main Road, Near Tel. Exchange
Bangalore - 560 003
Ph: 080 41411663

CHENNAI
GIRIAS INVESTMENT PVT LTD
No 249, AH Block, 7th Main Road, 1st Street
Shanthi Colony, Chennai 600 040
Ph: 044 26223633.

SOUTH INDIA'S NO.1 CONSUMER DURABLE RETAILER.

पृष्ठ १० से ... नवीन शाहदरा (दिल्ली), आगरा, ग्वालियर, जयपुर, इंदौर, नागपुर, मुंबई और अब सूरत गए, उनके आध्यात्मिक विचारों, महान विचारों, महान शिक्षाओं और जैन उपदेशों ने लाखों लोगों को ईमानदार, सच्चा और महान जीवन जीने में मदद की, चाहे वह छोटी चींटी हो या बड़ा हाथी, चाहे वह गरीब हो या अमीर, सभी के लिए उनकी देखभाल उन्हें खास बनाती है, उनके लिए सभी समान हैं। मानव जाति की सेवा करने के अपने उद्देश्य के साथ उन्होंने कई धार्मिक पुस्तकें (साहित्य) लिखी हैं जैसे आखिर क्यों, भूख, बोतल का तूफान, संत साधना, मेरी आवाज सुनो, प्रथम सोपान, राम बिना जग सुना, संस्कारों का शंखनाद, अनासक्त योगी, अरहत गीता, है बुद्धपा, कन्यादान और भी बहुत कुछ। ये मुनि श्री के गहन ज्ञान और धार्मिक व्यक्तित्व को दर्शाते हैं।

मुनि श्री अपने प्रवचनों के माध्यम से अपने महान आध्यात्मिक विचारों का अमृत फैला रहे हैं। मुनि श्री के प्रवचनों को हर कोई आसानी से समझ सकता है, चाहे वह जैन हो या अजैन, क्योंकि वे आम लोगों के लिए होते हैं, उनके प्रवचनों ने दुनिया को जगाया और गुमराह जीवन से मुक्त कर एक नई दिशा दी। हजारों लोग उनके प्रवचनों से प्रेरित होकर अपने सांसारिक कष्टों से मुक्ति पाने के लिए पुलक सागर जी महाराज के चरणों में शांति पाने के लिए आते हैं।

वे मानवता के सच्चे अवतार, अध्यात्म के शिक्षक, जैन धर्म के अनुयायी, जैन मान्यताओं के प्रचारक और ज्ञान के सागर हैं। लाखों लोगों के जीवन को बदलने का श्रेय आचार्य श्री को जाता है, उन्होंने सभी को 'जियो और जिनो दो' के आदर्श वाक्य के साथ शांतिपूर्ण जीवन जीने का तरीका सिखाया और प्रेरित किया है।

मैं अकिंचन्य ही हूँ

मेरा अंत:स्थल हमेशा ही निर्माण और विस्तार के विपक्ष में रहा है, मैं खुद समझ नहीं पा रहा हूँ कि इसे हालात कहूँ, मन की विवशता कहूँ

या अतिधर्मानुराग कहूँ या फिर नियति का फैसला ही मान लूँ। बहुत टाला, बहुत बचने का प्रयास किया, फिर भी नियति ने मुझे अपने पक्ष में कर ही लिया, अब मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ नियति ही मुझसे सब कुछ करा रही है।

आशीर्वाद मेरे पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री पुष्पदंत सागरजी महाराज का है। भूमि, पानी, पत्थर, वृक्ष ये सब तो प्रकृति प्रदत्त है। ईंट, मिट्टी, सीमेंट सब मानवीय अविष्कार हैं। धन धनपतियों का है, दानियों का है, आकार इंजीनियरों का मस्तिष्क है। श्रम श्रमिकों का है और समर्पण जिनभक्तों का है, ये सब बिखरे हुए थे, प्रकृति ने मुझे इनका संकलन व संयोजन करने के लिए निमित्त बनाया, मेरे आराध्य श्री पार्श्वनाथ भगवान ने मुझ नाचीज़ को इतने बड़े सौभाग्य में आगे किया और सृजन हो गया अकिंचन्य से जिनशरणं तीर्थ का...

स्वर्णिम गजरथ जिनालय

मैं मंदिर हूं, देवालय हूँ, जिनालय हूँ, देरासर हूँ, कोईल हूँ, क्षेत्रम् हूँ, जिसने मुझे जिस नाम से पुकारा, मैं वही हूँ, पर इससे भी बड़ी बात मेरे लिये यह है कि मैं आचार्य श्री पुलकसागरजी गुरुदेव के स्वर्णिम स्वप्नों का स्वर्णिम गजरथ जिनालय हूँ, जमीन से उठाकर गुरुदेव ने मुझे १०८ फीट उत्तुंग मुक्त आकाश प्रदान किया।

मेरी लहराती ध्वजाएं, मुझ पर चढ़े हुए स्वर्ण कलश, मेरे आनंद की हिलोरे मुझे मंदिर में विराजमान मूलनायक तीर्थाधिपति 'जिनशरणं' कल्पतरु पार्श्वनाथ जैसे परमानंद के स्रोत से जोड़ती है, जब हवायें मुझे छूती है, वे धन्य ही नहीं होती, मुझे छूकर जिस-जिस को छूती हैं, उन्हें भी धन्यता प्रदान करती है। स्वर्ग से उतरे हुए दो ऐरावत हाथी उस समय मेरे गौरव को बढ़ा देते हैं, जब स्वयं सौधर्म इंद्र सारथी बनकर मेरे प्रभू का रथ चलाते हुए सुशोभित होते हैं। रोज सुबह सूर्य मेरी आरती उतारता है, चांद तारे मेरी परिक्रमा लगाते हैं, कल्पवृक्ष की शीतल छाया मेरा आवास, भक्तों की भरी हुई झोलियाँ मेरा वरदान, क्योंकि मेरे मालिक तीर्थंकर पार्श्वनाथ हैं।

निस्पृह व्यक्तित्व आचार्य श्री महाश्रमण

जैन धर्म की श्वेताम्बर शाखा से करीब २६० वर्षों पहले प्रादुर्भाव में आया 'तेरापंथ' एक प्रगतिशील व यशस्वी सम्प्रदाय कहा जा सकता है, इसके प्रथम प्रवर्तक आचार्य श्री भीकणजी थे, उन्हीं के द्वारा लिखित एक पृष्ठीय संक्षिप्त लेख के आधार पर वर्तमान आचार्य द्वारा मनोनीत मुनि ही संघ का भावी आचार्य व सर्वेसर्वा होता है, उसी परम्परा के अनुसार तेरापंथ के नवम आचार्य अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी बने एवं उनके पट्टधर दशम आचार्य सुशोभित हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपना पट्टधर घोषित किया श्री महाश्रमणजी को, जिनका बचपन का नाम था मोहन। समस्त जैन पंथों की पत्रिका 'जिनागम' के प्रबुद्ध पाठकों को बताते हैं आचार्य श्री महाश्रमण जी की यशोगाथा:-

मोहान जी बचपन में

बचपन से ही अध्यात्म की ओर: मोहन का जन्म सरदारशहर कस्बे में श्री झुमरमलजी दुगड़ की व श्रीमती नेमा देवी की कुक्षी से दिनांक १८ मई १९६२ में हुआ, सात भाई व तीन बहिनें थी, माता धार्मिक प्रवृति की महिला थीं, साधु-साध्वियों की आराधना-सेवा में प्रायः जाती-आती थीं। मोहन पर अपनी माता की धार्मिक वृत्ति का काफी प्रभाव पड़ा, अतः इनका भी ८-१० वर्ष की उम्र से ही साधु-साध्वियों की सेवा-आराधना में काफी झुकाव हो गया, सन् १९७४ का मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) का चातुर्मास सरदारशहर में था, यह एक बड़ा ही सुखद संयोग बना। मुनिश्री ने तो मोहन की धार्मिक वृत्ति का खूब सिंचन किया तथा उनके साथ के सन्त मुनिश्री सोहनलालजी (चाड़वास) ने किशोर मोहन की ओर विशेष ध्यान दिया, काफी धार्मिक श्लोक आदि कंठस्थ करवाने व उसका अर्थ व भाव समझाने में अपनी शक्ति का नियोजन किया।

बालक मोहन का अध्यात्म की ओर झुकाव तो बढ़ता ही गया, इनकी समझने व कंठस्थ करने की प्रवृति काफी गजब की थी, कहना नहीं होगा कि मात्र कुछ माह में मोहन ने पच्चीस बोल, तेराह द्वार, बावन बोल, गतागत, बासठिया, लघुदण्डक, पाना की चर्चा आदि थोकड़ों को कंठस्थ कर लिया एवं दोहरा-दोहरा कर उनका शुद्ध उच्चारण भी सीख लिया, इसके साथ ही शैक्षणिक विद्यालय में भी बराबर जाता रहा, अपनी पाठ्य पुस्तक पढ़ने व समझने में भी अव्वल दर्जे का छात्र रहा, अपनी इसी विशिष्टता की वजह से प्रायः कक्षा में प्रथम, द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण होता रहा, प्रायः कक्षा का मॉनीटर भी मोहन ही होता, इस वजह से कक्षा में बच्चों की समस्या समझने, उनके समाधान करने व प्रशासकीय अनुभव का भी विकास साथ-साथ होता रहा।

वर्तमान में
आचार्य महाश्रमण जी

निर्णायक १२वां वर्ष: किशोर मोहन का १२वां वर्ष काफी निर्णायक साबित हुआ, पहले उसके मन में एक दुविधा थी कि मुझे गृहस्थ में रहना चाहिये या साधु बनना चाहिये, मोहन स्वयं ही अपने संस्मरणो में बताते हैं कि सन् १९७३ की 'सम्वत्सरी' के दूसरे दिन आचार्य कालुगणी का निर्वाण दिवस था, सम्भवतः एक स्वर्गस्थ आचार्य जो किसी देवलोक में स्थित थे, उन्होंने भी उसकी प्रतिभा को जान लिया था कि इसके माध्यम से मेरे तेरापंथ धर्मसंघ का और अधिक शुभ भविष्य उजागर होने वाला है, तो उन्होंने उसे अपना भावी पट्टधर मानकर, उसकी मानसिकता में ऐसा प्रवेश किया कि उसने साधु जीवन स्वीकार करने का मानसिक निश्चय कर लिया एवं मोहन का हर कदम इसी ओर बढ़ने लगा।

दीक्षा का आदेश: तेरापंथ धर्मसंघ का मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम, पूरे विश्व के धर्मसंघों में एक अनोखा ही होता है, जिसमें संघ द्वारा निर्धारित मर्यादाओं पर अडिग रहने व उनकी पालना करने को प्रति वर्ष प्रतिबद्ध होते हैं। सन् १९७४ की फरवरी को यह कार्यक्रम अणुव्रत भवन, दिल्ली में आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में आयोजित था। मोहन ने अपने परिवार सहित अपनी दीक्षा का निवेदन किया। परिवार की मनोकांक्षा से आचार्यश्री ने स्वीकृति देते हुए उनकी दीक्षा 'सरदारशहर' में ही देने की, मुनिश्री सुमेरमलजी को आज्ञा प्रदान कर दी।

आचार्य श्री तुलसी जी की आज्ञा से मुनि श्री सुमेरमलजी (लाडनूं) ने ५ मई १९७४ को सरदारशहर में गपैयाजी के नोहरे के प्रांगण में दो संतों को दीक्षा प्रदान कर दी, और किशोर मोहन बन गया मुनि मुदित, उनके साथ अन्य मुनि उदित जो पिछले अनेक वर्षों से मुनि सुमेरमलजी की सेवा में ही विरचित रहे थे। दीक्षा के बाद मुनि मुदित का एक मात्र प्रयास रहा अध्यात्म ग्रन्थों का पाठन, कंठस्थ करना एवं अपनी स्वयं की साधना करना, इसका प्रतिफल यह रहा यह कि छोटे से काल में मुनि मुदित ने दसवें आलय सूत्र, अनुष्टुण श्लोक आदि अनेकों सूत्रों व ग्रन्थों का अर्थ सहित कंठस्थ करते हुए उनके शुद्ध उच्चारण का भी अभ्यास किया।

महाप्रज्ञजी के सहयोगी: १६ फरवरी १९८६ उदयपुर! मर्यादा महोत्सव के एक अवसर पर आचार्यप्रवर तुलसी ने फरमाया कि तत्कालीन युवाचार्य महाप्रज्ञ को अनेक तरह के कार्य करने होते हैं, अतः उन्हें एक सक्षम सहयोगी की अत्यन्त अपेक्षा है, **शेष पृष्ठ १४ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

पृष्ठ १३ से ... अतः इस हेतु मुदित मुनि को उनका अन्तरंग सहयोगी रूप में नियुक्त कर रहा हूं एवं वो युवाचार्यश्री के हर कार्य में पूर्ण सहयोगी रहेंगे, इस दायित्व से मुदित मुनि का कार्य क्षेत्र काफी बढ़ गया, वो पहले ही आत्मकेन्द्रित ज्यादा थे एवं अपने में ही मस्त व व्यस्त रहने वाले को अब व्यापक क्षेत्र में काम करने का अवसर मिलने लगा, इससे उनके अनुभव व सम्पर्क का विस्तार होने लगा।

साझपति का सम्मानः दीक्षा लेने के अनेकों वर्षों तक साधु-साध्वियों को किसी अन्य वरिष्ठ साधु के साथ रखा जाता है, जब वह स्वयं ही काफी योग्य व अन्य योग्यताएं प्राप्त कर लेता है तो उसे सिंघाड़पति/साझपति बना दिया जाता है, मई १९८६ को व्यावर में मुनि मुदित को भी यह सम्मान प्राप्त हो गया, यह आचार्य श्री द्वारा उनका विशेष अंकन था, जो उन्हें प्राप्त हुआ।

महाश्रमण पद से विभूषितः तेरापंथ धर्मसंघ में इससे पूर्व कोई भी सन्त, श्रमण (साधु) से महाश्रमण पद पर सम्मानित नहीं हुआ था, यह पहला अवसर था जब गुरू तुलसी ने अपने शिष्य की विशेष योग्यता का अंकन करते हुए अपने स्वयं के जन्म दिवस पर ९ सितम्बर १९८९ को लाडनूं में इन्हें महाश्रमण पद से विभूषित किया, मुनि मुदित की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए एक विशेष नियुक्ति-पत्र प्रदान किया।

युवाचार्य बने आचार्यः सन् १९९४ के सुजानगढ़ मर्यादा महोत्सव पर आचार्य तुलसी ने स्वयं के पद पर रहते हुए अपना पद विसर्जन करते हुए, युवाचार्य महाप्रज्ञ को नया आचार्य घोषित किया, यह इतिहास की अनोखी घटना थी, शायद पूरे जिन शासन में ऐसा कब व किसके द्वारा हुआ, शोध का विषय है।

अगले वर्ष, अध्यात्म साधना केन्द्र दिल्ली में **शेष पृष्ठ १५ पर...**

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६४वें जन्म पर्व पर शत् शत् नमन

विजयराज सुराणा जैन
9868807683

राजीव सुराणा जैन
9810030672

SWASTIK
Marketing Company

Manufacturers & Dealers
XLPE/PVC Armoured & Unarmoured Telecommunication
& Co-axial, House Wiring & Submersible, Instrumentation

Ollvin
Connecting life...
WIRES & CABLES

B-35/3, Jhilmil Industrial Area, Delhi- 110095
Tel: 011-35009785, 9810030672
E-mail: swastikmarketing.70@gmail.com
www.ollvin.in

!! ॐ अर्हम् !!

जय भिक्षु

जय तुलसी

जय महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६४वें जन्म वर्ष पर
कोटि-कोटि वंदन

RAJESH KOCHAR
Mob: 9310142041/ 9871374003

BIKANER ASSAM
ROADLINES INDIA LIMITED

2nd Floor, Bhola Mansion HB Road, Fancy Bazar
Guwahati, Assam, Bharat- 781001
Tel: 0361 2545705, Tele Fax: 0361 2511316

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

!! ॐ अर्हम् !!

जय भिक्षु

जय तुलसी

जय महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर
अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत
आचार्य महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर
कोटी-कोटी वंदन!

Sidharth Parakh
Mob: 94311 27180/ 9572890011

Shree Vali Metal (P) Ltd.
Purulia Road, Chas, Bokaro, Jharkhand- 827013
Ph: 9234303226
e-mail: Shreevalietals@gmail.com

।। ॐ अर्हम् ।।

जय तुलसी जय भिक्षु जय महाप्रज्ञ

अहिंसा यात्रा-अणुव्रत से, युगधारा में भर रहे प्राण
दृष्टि तुम्हारी है राष्ट्र का हो सर्वांगीण निर्माण
नयी पीढ़ी को मिलता रहे संस्कारों का सिंचन
महान है श्रमणत्व तुम्हारा
।। जय-जय ज्योति चरण - जय-जय महाश्रमण ।।

बिमल आसकरण जैन (दुगड़)
भ्रमणध्वनि : 98200 25699
अभिमन्यु जैन श्रेयांस जैन

JCC
THE GIANT MOVERS
JCC INDIA PVT. LTD.
Logistics | Infrastructure | Rental
D-4100, BIMA Complex, Kalamboli, Navi Mumbai,
Maharashtra, Bharat - 410 218
Ph. : 022-27425055 Fax : 022-27425066 Email: bimaljain@jccindia.com

पृष्ठ १४ से ... आयोजित मर्यादा महोत्सव पर इसका विधिवत पदाभिषेक समारोह आयोजित किया गया, तेरापंथ के इतिहास में इतना अनोखा व इतना

संकलन चित्र

शानदार विशाल आयोजन पहली बार हुआ था। आचार्य तुलसी ने अनुष्ठानपूर्वक शास्त्रीय विधि विधान से उन्हें आचार्यपद पर प्रतिष्ठापित किया, उसके बाद उन्होंने महाश्रमणजी को एक लिखित पत्र सौंपा, जिसका विवरण निम्न है-

अर्हम्

महाश्रमण मुनि मुदितकुमार आचार्य महाप्रज्ञ के गण संचालन के कार्य में सतत सहयोगी रहे तथा स्वयं गण-संचालन की योग्यता विकसित करे, इसके लिये अवशेष जो करणीय है वह उचित समय पर आचार्य महाप्रज्ञ करेंगे।

- गणाधिपति तुलसी

५ फरवरी १९९५

इसके वाचन व सुपुर्दगी के बाद वहां उपस्थित किसी भी व्यक्ति को सन्देह नहीं रहा कि अब महाप्रज्ञ के युवाचार्य एवं भावी आचार्य महाश्रमणजी होंगे। महाश्रमण मुदित ने अपने दोनों गुरूओं के मध्य अपनी योग्यता की इतनी पैठ जमा दी थी कि भावी आचार्य की स्पष्ट संभावनाएं नजर आ गई।

सरदारशहर पदार्पण: आचार्य महाप्रज्ञजी का ज्योतिष में भी विश्वास था, उसके अनुसार उनके आयुष्य का यह अन्तिम वर्ष था, अतः सन् २०१० के चातुर्मास प्रवेश के समय ही उनके श्रीमुख से यह सहज ही उच्चारित हो गया- 'यह सरदारशहर का चातुर्मास महाश्रमण का चातुर्मास होगा।' होनहार घटकर ही रहता है एवं ९ मई २०१० की भरी दोपहरी में सरदारशहर में तेरापंथ का महासूर्य अस्त हो गया, केवल तेरापंथ धर्मसंघ ही नहीं बल्कि पूरा जैन धर्म संघ व अन्यान्यों ने भी इसे अपूरणीय क्षति माना।

११वें आचार्य महाश्रमण: तेरापंथ परम्परा के अनुसार महाश्रमण जी आचार्य बन गये एवं उनके पदाभिषेक का अत्यन्त भव्य व विशाल समारोह गांधी विद्या मंदिर के विशाल प्रांगण में २३ मई २०१० में सम्पन्न हुआ, जिसमें पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी सहित अनेक राजनेताओं, विद्वानों की उपस्थिति में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के निर्देशन में सम्पन्न कार्यक्रम में अपना पद ग्रहण किया। नव प्रतिष्ठित आचार्यश्री ने काफी भावपूर्ण उदगार व्यक्त करते हुए निम्न संकल्प भी स्वीकार किये-

➤ मैं तेरापंथ की परम्परा, मर्यादा, आचार- **शेष पृष्ठ १६ पर ...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १५ से ... विचार और संचारी की एकता को अक्षुण्ण रखने का पूरा प्रयास करूँगा।

➤ मैं तेरापंथ धर्मसंघ के दायित्व का पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वाह करूंगा।

➤ मैं तेरापंथ के व्यापक दृष्टिकोण एवं कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करूंगा।

संकलन चित्र

भावी योजना: उन्होंने अपने उद्बोधन में यह भी कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की अवस्थता से जो घोषित चातुर्मास व मर्यादा महोत्सव अशेष रह गये थे, उन्हें अब मैं पूरा करुंगा, उस अनुरूप सन् २०११ का चातुर्मास केलवा में किया, उसी कस्बे की अंधेरी ओरी में आचार्य भिक्षु ने अपना पहला चातुर्मास किया था, जहां पर यक्ष रहता था, उसके बाद सन् २०१२ का जसोल व २०१३ का जैन विश्व भारती लाडनूं में चातुर्मास कर आप २०१४ के चातुर्मास हेतु अध्यात्म साधना केन्द्र दिल्ली पधारे, यहां पर अपने दीक्षा गुरू, शिक्षा गुरू की जन्म शताब्दी का भव्य आयोजन संपन्न कराया, वहां पर उनके जीवन पर आधारित दो खण्डों में प्रकाशित विशाल जीवन दर्शन ग्रन्थ एवं उनकी रचित १०८ पुस्तकों को संशोधन सहित पुनः प्रकाशित करके लोकार्पण हुआ।

पूर्व व दक्षिण भारत: लाल किले के प्रांगण में उनकी पूर्वी भारत की यात्रा हेतु ९ नवम्बर को विशाल आयोजन हुआ, जिसमें नेपाल के उपराष्ट्रपति भी पधारे। काठमाण्डु होते हुए २०१५ का चातुर्मास विराटनगर (नेपाल) फिर भूटान होते हुए २०१६ का चातुर्मास गौहाटी किया, २०१७ का चातुर्मास कोलकाता करने के पश्चात सन् २०१८ का चातुर्मास चेन्नई में सम्पन्न किया, इस लम्बी यात्रा के दौरान 'अहिंसा यात्रा' के माध्यम से जन-जन में नैतिकता व अहिंसा के भावों को पुर्नप्रतिष्ठापित करने हेतु विशेष श्रम करते रहे, सन् २०१९ का बैंगलोर, २०२० का हैदराबाद, २०२१ का भीलवाड़ा,

संकलन चित्र

२०२२ का छापर, २०२३ का मुम्बई, २०२४ का सूरत व २०२५ का अहमदाबाद में चातुर्मास प्रस्तावित है।

निस्पृह व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाश्रमणजी की श्रम साधना व उपासना व उपदेशों से सभी प्रभावित होते हैं 'जिनागम' परिवार गौरवान्वित भी हैं, उनके स्वस्थ रहने व शतायु रहने की कामना करते हैं।

- विजयराज सुराणा

मो.: ९८६८८०७६८३

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

समय का सदुपयोग चेतना की निर्मलता के विकास में हो

- आचार्य महाश्रमण

काल प्रतिलेखना का मतलब है समय की प्रतिलेखना करना, उसको पहचान लेना, समझ लेना। आज तो घड़ियां उपलब्ध हैं और लोगों के हाथों में घड़ी बंधी रहती है।

यह समय को बताने वाला यंत्र नवजवानों के लिए हाथ का आभूषण-सा बना हुआ है, घड़ी की यह विशेषता है कि यह समय को सूचित करती है, कुछ समय पूर्व तक तो हमारी श्राविकाएं रेत की घड़ी रखा करती थीं, मुहूर्त का समय जानने में उसका उपयोग होता था, आज तो समय को जानना बहुत आसान हो गया है, रात्रि के अंधेरे में भी समय को जाना जा सकता है, कई घड़ियां रात्रि में देखने वाली होती हैं, कईयों में लाईट होती है अथवा टॉर्च आदि के प्रकाश से देखी जा सकती हैं, साधु संस्था में भी समय को जानना आवश्यक होता है, किस समय प्रतिलेखना करना, किस समय स्वाध्याय करना, किस समय प्रतिक्रमण करना आदि साधुचर्या के अनेक अंग हैं, जिनका निर्वाह करना अनिवार्य होता है और वे समयबद्ध होने चाहिए।

समय प्रबंधन का ध्यान रखने वाला व्यक्ति पांच-पांच मिनट का भी उपयोग कर लेता है, आदमी दिनचर्या को ठीक बनाने के लिए यह निश्चित करे कि मेरा उठने और सोने का समय कौन-सा होना चाहिए, किस समय, कौन-सा काम करना चाहिए, कब अध्ययन करना, कब जनसम्पर्क करना, कब व्यवसाय आदि का काम करना? इस प्रकार समय की ठीक निर्धारणा हो, कदाचित् उसमें परिवर्तन भी किया जा सकता है, परन्तु सामान्यतया दिनचर्या व्यवस्थित हो तो समय का सदुपयोग और व्यवस्थित उपयोग किया जा सकता है। अंग्रेजी भाषा का एक सुन्दर सूक्त है- Time is Money समय धन है, जैसे एक सामान्य स्थिति वाला आदमी पांच रुपये भी सोच समझकर खर्च करता है, उसके लिए धन का कितना मूल्य होता है, इसी प्रकार समय का मूल्यांकन भी करना चाहिए और समय का व्यय भी सोच-सोचकर अच्छे कार्यों में करना चाहिए, जो लोग बुद्धिमान हैं, समझदार हैं, उनका समय काव्य की चर्चा, शास्त्र की चर्चा यानि ज्ञानचर्चा और अच्छे कार्यों में व्यतीत होता है। हर शेष पृष्ठ १८ पर...

!! ॐ अर्हम् !!

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६४वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

Arun Nahata
Director
Mobile : 9844172302

Lalit Nahata
Director
Mobile : 9844172304

KEPL
Estd in 1999

Krita Engineering (P) Limited

Expertise in: Turnkey Infrastructure Installation & Trenchless Technology

No .4/4, Maruthi Plaza, 2nd Floor, M.S.R.C.E Rood, Bangalore, Karnataka, Bharat - 560 054
Ph.:- 080-41553191/080-4352 4444 | Web www.krita.in
email:- akn1927@gmail.com/arun@krita.in

।। ॐ अर्हम् ।।

जय तुलसी जय भिक्षु जय महाप्रज्ञ

अहिंसा यात्रा-अणुव्रत से, युगधारा में भर रहे प्राण
दृष्टि तुम्हारी है राष्ट्र का हो सर्वांगीण निर्माण
नयी पीढ़ी को मिलता रहे संस्कारों का सिंचन
महान है श्रमणत्व तुम्हारा
।। जय-जय ज्योति चरण - जय-जय महाश्रमण ।।

Uttam Chand Nahata Jain
Manakchand Nahata Jain
Sanjay Nahata Jain
Piyush Nahata Jain

RCN Construction Company Pvt Ltd
UCN Construction Company Pvt Ltd

R. K. Path, Itachali, Nagaon, Assam, Bharat-782001
दूरध्वनि : 03672-231472 / 84 Fax : 03672-233806
भ्रमणध्वनि. 09435061677 अणुडाक : rj.group@yahoo.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १७ से... आदमी नादानगी न करे, बड़ी समझदारी के साथ समय का उपयोग करने का प्रयास करे। आदमी ब्रह्ममुहूर्त में उठने का प्रयास करे, ब्रह्ममुहूर्त का समय पवित्र समय माना जाता है, वैसे तो आदमी जिस समय अच्छा काम करे, वह समय उसके लिए पवित्र हो जाता है, फिर भी सूर्योदय से एक घंटा पहले आदमी निद्रा को त्याग दे, वह एक घंटा मुख्यतया सामायिक, स्वाध्याय, धर्म की साधना आदि में लगे तो आदमी के दिन का प्रारंभ मंगल के साथ होगा, उसे एक आध्यात्मिक खुराक प्राप्त हो जाएगी।

प्रत्येक व्यक्ति को चौबीस घंटे का समय मिलता है, ऐसा कभी नहीं होता कि किसी मंत्री महोदय को तो पच्चीस घंटे का समय मिलेगा और संतरी को तेईस घंटे का समय मिलेगा, सबको बराबर समय मिलता है, यह प्रकृति की देन है, यहां प्रश्न होता है कि इस महत्वपूर्ण समय का आदमी उपयोग क्या और किस रूप में करता है? क्या हमारा समय केवल शरीर के लिए ही व्यतीत होता है या कुछ समय चेतना के लिए भी लगता है? खाना-पीना, सोना, कमाना आदि कार्य मुख्यतया शरीर को केन्द्र में रखकर किए जाते हैं। आदमी आत्मा को भी याद रखे, कुछ आत्मा के लिए भी करे, शरीर नश्वर है, आत्मा को अमर कहा गया है, आदमी इस नश्वर शरीर से अमर आत्मा के लिए क्या करता है? शरीर अध्रुव है, धन सम्पत्ति भी अध्रुव है, मृत्यु निकट हो रही है, इसलिए धर्म का संचय करना चाहिए, चौबीस घंटों में से अधिक समय न निकाल सकें तो प्रत्येक घंटे में से कम से कम एक या दो मिनट का समय निकालकर अलग से उसका संग्रह कर लिया जाए तो हर दिन २४ या ४८ मिनट का समय साधना में लगाया जा सकता है, उस समय में चाहे अच्छे ग्रंथ का स्वाध्याय किया जाए, ध्यान किया जाए, कोई न कोई आध्यात्मिक साधना यदि कुछ समय के लिए हो जाती है तो जीवनचर्या या दिनचर्या का सुन्दर क्रम बन सकता है।

शरीर के लिए भोजन अनिवार्य होता है तो चेतना के लिए भी भोजन आवश्यक है, शरीर के लिए स्नान किया जाता है तो चेतना की शुद्धि के लिए भी स्नान जरूरी है, शरीर का भोजन रोटी आदि है तो चेतना का भोजन भजन, स्वाध्याय, सामायिक आदि है। शरीर का स्नान पानी से किया जाता है किन्तु चेतना का स्नान प्रतिक्रमण, आत्मा निरीक्षण, आत्मालोचन, ध्यान आदि से हो सकता है। आदमी अपने जीवन में महत्वपूर्ण कार्य करे। गरिमापूर्ण कार्यों में अपना समय लगाए। बड़ी-बड़ी कंपनियों में काम करने वाले हों अथवा अन्य कोई कार्य करने वाले हों, यदि समय प्रबंधन ठीक नहीं है तो कार्य की सफलता में बाधा उत्पन्न हो जाती है, उस बाधा को निवारित करने के लिए समय प्रबंधन को सीखना और उसे क्रियान्वित करना आवश्यक है, वह मनुष्य सामान्य है, जो समय का सामान्य कार्यों में उपयोग करता है। अध्यात्म के संदर्भ में चेतना के लिए समय नियोजित करना समय का उत्तम उपयोग है। मात्र भोग में ही समय को लगा देना समय का पूर्णतया उत्तम उपयोग नहीं होता, इसलिए आदमी चेतना के प्रति जागरूकता रखे, चेतना की निर्मलता के विकास में समय का नियोजन हो तो समय का उत्तम उपयोग हो सकेगा।

प्रेषक- विजयराज सुराणा
नयी दिल्ली

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
INDIA नहीं
'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

▪ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ▪

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

दुल्हन वही जो पिया मन भाए, बहु वही जो सास मन भाए

रिश्तों के बेताज बादशाह **पदमचंद जैन**

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO **जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव**

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन
उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया (अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष) | चंद्रराज सिंघवी (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. प्रकाश गोलेछा (योजना मंत्री) | नरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.सि.) | वसंत जैन (राष्ट्रीय संगठन मंत्री) | संजय जैन (कोर्डिनेटर) | सुरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय प्रचार मंत्री)

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आचार्य श्री महाश्रमण की प्रेरक अहिंसा यात्रा

राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाश्रमण कीर्तिधर यायावर हैं, जिन्होंने अपनी अहिंसा यात्रा के माध्यम से न केवल 'भारत' ही नहीं, बल्कि पड़ौसी देश नेपाल एवं भूटान की पदयात्रा भी की है। गांव-गांव, नगर-नगर, प्रांत-प्रांत घूमते हुए उन्होंने अहिंसा, साम्प्रदायिक सौहार्द, मैत्री, समन्वय, राष्ट्रीय एकता एवं सद्भाव की प्रतिष्ठा करने में अपूर्व एवं ऐतिहासिक योगदान दिया है तथा लाखों लोगों से सीधा सम्पर्क स्थापित कर उन्हें अहिंसक बनने, साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने एवं व्यसनमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दे रहे हैं।

हिंसा का ताण्डव अनेक बार देखने को मिला, जबकि अहिंसा सबसे ताकतवर हथियार है, बशर्ते की इसमें ईमानदारी बरती जाए, लेकिन देश में किसान आन्दोलन हो या ऐसे ही अन्य राजनैतिक आन्दोलन या आतंकवाद आंदोलन, उनमें हिंसा का होना गहन चिन्ता का कारण बना है। हिंसा, नक्सलवाद और आतंकवाद की स्थितियों ने जीवन में अस्थिरता एवं भय व्याप्त कर रखा है। अहिंसा को इस पवित्र भारत भूमि में हिंसा का ऐसा तांडव सोचनीय व भयावह है। महावीर, बुद्ध, गांधी एवं आचार्य तुलसी आदि के देश में हिंसा को अपने स्वार्थपूर्ति का हथियार बनाना गंभीर चिंता का विषय है, इस जटिल माहौल में आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा अहिंसा यात्रा के विशेष उपक्रम के माध्यम से अहिंसक जीवन शैली और उसके प्रशिक्षण का उपक्रम और विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग, संप्रदाय के लोगों के बीच संपर्क अभियान चलाकर उन्हें अहिंसक बनने को प्रेरित किया जाना न केवल प्रासंगिक ही नहीं रहा, बल्कि जीवन की बड़ी आवश्यकता बनी। आचार्य श्री महाश्रमण जी की अहिंसा यात्रा धर्म की यात्रा बनी, मैत्री यात्रा बनी, प्रेम एवं अपनत्व की यात्रा बनी, नशामुक्ति की यात्रा बनी, साम्प्रदायिक सौहार्द की यात्रा बनी, समता एवं समन्वय की यात्रा बनी, जीवन मूल्यों की यात्रा बनी एवं सेवा-परोपकार की यात्रा बनी। भाषा, रंग सम्प्रदाय एवं भौगोलिकता में बंटी मानव जाति की एकता को सुनिश्चित करना ही इस यात्रा का उद्देश्य रहा, इंसानों को आपस में तोड़ने नहीं, बल्कि जोड़ने के लिए इस यात्रा ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई, विशेषतः अहिंसक शक्तियों को संगठित करने का प्रयास किया गया, क्योंकि अहिंसा ताकतवरों का हथियार है, दमनकारी के खिलाफ सिर उठाकर खड़ा हो सकता है, जिसे कोई डर न हो, जो अहिंसक हो एवं मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध हो।

आचार्य श्री महाश्रमण ने दिनांक ९ नवम्बर २०१४ को राजधानी दिल्ली के लाल किला प्राचीर से 'अहिंसा यात्रा' का शुभारंभ किया और इसी दिल्ली में २७ मार्च २०२२ को आठ वर्षीय ऐतिहासिक अविस्मरणीय एवं विलक्षण यात्रा का तालकटोरा स्टेडियम में समापन होना एक सुखद संयोग बना, उन्होंने बाइस राज्यों एवं दो पड़ोसी देशों की करीब ५५ हजार किलोमीटर की पदयात्रा करते हुए अहिंसा और शांति का पैगाम फैलाया। नेपाल में भूकम्प, कोरोना की विषम परिस्थितियों में इस यात्रा का नक्सलवादी एवं माओवादी क्षेत्रों में पहुंचना, आचार्य महाश्रमण जी के दृढ़ संकल्प, मजबूत मनोबल एवं आत्मबल का परिचायक है, क्योंकि आज भारत एवं दुनिया हिंसा एवं युद्ध के महाप्रलय से भयभीत और आतंकित है, जातीय उन्माद, सांप्रदायिक विद्वेष और जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं का अभाव ऐसे कारण हैं जो हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं और इन्हीं कारणों को नियंत्रित करने के लिए आचार्य महाश्रमण अहिंसा यात्रा के विशिष्ट अभियान के माध्यम से प्रयत्नशील रहे। आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी अहिंसा यात्रा में नक्सलवादी क्षेत्रों को यात्रा के दौरान स्थान-स्थान पर नक्सलियों से मिलें, उन्हें हिंसा, नफरत एवं द्वेष का मार्ग छोड़ने को प्रेरित किया, जिसका व्यापक प्रभाव देखने को मिला है। आचार्य महाश्रमण जी नक्सल समस्या के समाधान के लिए एक ईमानदार कोशिश की जरूरत को महसूस करते दिखाई दिये। आचार्य महाश्रमण जी का मानना है कि कोई भी व्यक्ति हिंसा के रास्ते पर नहीं चलना चाहता, उन्हें कुछ लोग अपने स्वार्थों के लिए जानबूझकर गलत रास्ते पर ले जाते हैं। नक्सलवाद देश की एक बड़ी समस्या है, यह सामाजिक-आर्थिक कारणों से उपजी समस्या है। आदिवासी गरीबी, बेरोजगारी और सरकारी उपेक्षा के कारण एक निचले स्तर की जीवनशैली जीने को मजबूर है।

जब-जब इस तरह मानवता ह्रास की ओर बढ़ती है, नैतिक मूल्य अपनी पहचान खोने लगती है, समाज एवं राष्ट्र में पारस्परिक संघर्ष की स्थितियां बनती है, तब-तब कोई न कोई महापुरुष अपने दिव्य कर्तव्य, चिन्मयी पुरुषार्थ और तेजोमय शौर्य से मानव, मानव की चेतना को झंकृत कर जन-जागरण का कार्य करता आया है।

आचार्य महाश्रमणजी के प्रति जनमानस का विशेष रूप से आशान्वित होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि उन्होंने अहिंसा, नैतिकता, लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना, राजनीति शुद्धता, चारित्रिक उज्ज्वलता एवं सांप्रदायिक सौहार्द के लिए विशेष प्रयत्न किए, उनके जीवन का सार अहिंसा एवं नैतिकता है, वे संतपुरुष के साथ एक संवेदनशील महामानव है, धर्म जगत के वे ऐसे आविष्कारक हैं जो स्वयं अहिंसा का जीवन जीते हुए मानव मात्र में अहिंसा को प्रतिष्ठित कर सकते हैं, स्वयं पवित्रता एवं चारित्रिक उज्ज्वलता का जीवन जीते हुए अणुव्रत आन्दोलन के अनुशास्ता के रूप में देश एवं दुनिया में नैतिकता की प्रतिस्थापना करना चाहते हैं।

आचार्य शासना में 'अहिंसा यात्रा' के महान् संकल्प से आचार्य महाश्रमण जी ने मानव चेतना के विकास के हर पहलू को उजागर किया। श्रीराम, महावीर, बुद्ध, जीसस के साथ ही भारतीय अध्यात्म आकाश **शेष पृष्ठ २१ पर...**

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६४वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

Research Dev. & Mfg. Corporation

Manufacturers Of:
SPUR, HELICAL, BEVEL, WORMS,
WORM WHEEL, RACKS & GEAR BOXES

490 (K), 2nd Stage, 4th Phase,
Peenya Industrial Area, Bangalore,
Karnataka, Bharat - 560 058
Ph. : 080 - 22974041
Fax : 080 - 41171049

Mob. : 9448045383 / 9972381111

पृष्ठ २० से... के अनेक संतों आदि शंकराचार्य, कबीर, नानक, रैदास, मीरा आदि की परम्परा से ऐसे जीवन मूल्यों को चुन-चुनकर युग की त्रासदी एवं उसकी चुनौतियों को समाहित करने का अनूठा कार्य उन्होंने इस यात्रा के दौरान किया। जीवन का ऐसा कोई भी आयाम नहीं है, जो उनके प्रवचनों-विचारों से अस्पर्शित रहा हो। योग, तंत्र, मंत्र, यंत्र, साधना, ध्यान आदि के गूढ़ रहस्यों पर उन्होंने सविस्तार प्रकाश डाला, साथ ही राजनीति, कला, विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, शिक्षा, परिवार, समाज, गरीबी, जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण, हिंसा जातीयता, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराधीकरण, भ्रूणहत्या और महंगाई के विश्व संकट जैसे अनेक विषयों पर भी अपनी क्रांतिकारी जीवन-दृष्टि प्रदत्त करते हुए 'अहिंसा यात्रा' में ऐसा आलोक बिखेरा, जो मानव-जीवन की मूल आवश्यकता है, जब उनकी उत्तराध्ययन और श्रीमद् भगवद्गीता पर आधारित प्रवचन श्रृंखला सामने आई, आध्यात्मिक जगत में एक अभिनव क्रांति का सूत्रपात किया। एक जैनाचार्य की भांति सनातन परम्परा के श्रद्ध स्पद ग्रंथ 'गीता' की गीताकार के साथ सटीक व्याख्या करना, न केवल आश्चर्यजनक है बल्कि प्रेरक भी है, इसीलिये तो आचार्य महाश्रमण जी मानवता के मसीहा के रूप में जन-जन के बीच लोकप्रिय एवं आदरास्पद बने है, आप एक ऐसे संत हैं, जिनके लिये पंथ और ग्रंथ का भेद बाधक नहीं बनता, आपकी 'अहिंसा यात्रा' के कार्यक्रम, विचार एवं प्रवचन सर्वजनहिताय होते रहे, इस यात्रा के दौरान हर जाति, वर्ग, क्षेत्र और सम्प्रदाय की जनता आपके जीवन-दर्शन एवं व्यक्तित्व से लाभान्वित होती रही, आपकी आवाज सब जगह गूंजती रही,

संकलन चित्र

जितना भी आपने बोला उसका निचोड़ बस इतना है कि आदमी अपनी असलियत से रूबरू हो जाए, हम समाज एवं राष्ट्र के सपनों का सच बनाने में सचेतन बने, यही आचार्य महाश्रमण जी की प्रेरणा है और इसी प्रेरणा को जीवन-ध्येय बनाना, हमारे लिए शुभ एवं श्रेयस्कर है। समस्त जैन पंथों की एकता के लिए प्रयासरत विश्वस्तरीय 'जिनागम' पत्रिका परिवार का आचार्य श्री महाश्रमणजी से अपेक्षा और विनम्र निवेदन है कि वे 'अहिंसा यात्रा' के साथ एक नव-अभियान एवं यात्रा का शुभारंभ करें जो देश ही नहीं समूची दुनिया को एक नया आलोक दे।

-विजयराज सुराणा
नयी दिल्ली

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जैन समाज की अनमोल निधि

श्री निर्मलकुमार जैन (सेठी)

नई दिल्ली: श्री निर्मल कुमार जैन सेठी जी ने अपने जीवन काल में पूरे भारत में फैली जैन धरोहर की रक्षा के लिए बहुत मेहनत की, उन्होंने लगभग सभी पुरातात्विक स्थलों का विस्तार और इसके पुरातात्विक अवशेषों का पता लगाने के लिए विदेशों में भी प्रतिनिधि मंडल को ले कर गए, उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में नष्ट हुए जैन स्मारकों के साक्ष्यों को युवा पीढ़ी और जैन समुदाय के साथ पुरातात्विक के बीच शोध के लिए प्रोत्साहित किया। जैन धर्म के प्रति उनके योगदान के लिए उन्हें विभिन्न पुरस्कार भी मिले, अब हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम इस धर्म की बेहतरी के लिए उनके कार्य को आगे बढ़ाएं साथ ही उनके विभिन्न कार्यों के बारे में नई पीढ़ी के बीच उनके योगदान की चर्चा भी करें। जैन धर्म के विरासत के प्रति उनके विशाल योगदान को याद करने के लिए हर वर्ष २७ अप्रैल को जैन धर्म के विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न संगोष्ठी का आयोजन कर दुनिया भर में जैन धरोहर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जाये, स्थानीय लोगों के साथ जैन गुफाओं, मंदिरों और मूर्तियों पर एक प्रदर्शनी के लिए भी योजना बनाई जाए, इस प्रकार के आयोजनों का आयोजन देखकर हम अपने प्यारे बाबूजी के योगदान को याद कर सकते हैं। सेठी जी की वर्ष २०२२ में प्रथम पुण्य तिथि दिल्ली एवं मथुरा में मनायी गयी, जिसमें श्री निर्मल कुमार जैन सेठी मेमोरियल पुरस्कार दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में श्री जमनालाल हपावत मुम्बई, कला और पुरातत्व के क्षेत्र में प्रो. अनुरा मानतुंगा श्रीलंका, वर्ष २०२३ में द्वितीय पुण्य तिथि गुवाहाटी एवं सूर्यपहाड़ में मनाई गयी, जिसमें श्री निर्मल कुमार जैन सेठी मेमोरियल पुरस्कार दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में स्व. भरत कुमार काला मुम्बई, कला और पुरातत्व के क्षेत्र में डॉ. शुभा मजमूदार कोलकाता, वर्ष २०२४ में तृतीय पुण्य तिथि श्रवणबेलगोला एवं बंगलोर में मनायी गयी, जिसमें श्री निर्मल कुमार जैन सेठी मेमोरियल पुरस्कार दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में श्री ज्ञानमल शाह अहमदाबाद, कला और पुरातत्व के क्षेत्र में श्रीमती सुचित्रा दास भुवनेश्वर को प्रदान किया गया।

चतुर्थ पुण्य तिथि के अवसर पर जैन धरोहर दिवस २७ अप्रैल २०२५ को मुकेश पटेल ऑडोटोरियम, मुंबई, महाराष्ट्र में मनाया गया तथा २६ अप्रैल २०२५ को पश्चिम भारत की जैन गुफायें एवं उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण पर सेमिनार अभय प्रभावना म्यूजियम लोनावाला, पुणे महाराष्ट्र में हुआ।

श्री निर्मलकुमार जी जैन सेठी

स्व. श्री निर्मलकुमार जी जैन सेठी, जैन समाज के ऐसे दीपस्तम्भ थे, जिन्होंने जैन समाज के चतुर्मुखी विकास के लिए तन, मन और धन समर्पण किया। समाज में उनकी लोकप्रियता का यह प्रमाण है कि वे चार दशक तक महासभा के पर्याय के रूप में विख्यात रहे। तीर्थ, पुरातत्व, कला, संस्कृति, साहित्य प्रकृति के संरक्षण में उनका सराहनीय योगदान जैन समाज कभी भी विस्मृत नहीं कर सकता।

श्री सेठीजी का जन्म ८ जुलाई, १९३८ में तिनसुकिया (असम) में हुआ था, पिता का नाम स्व. श्री हरकचन्द्र जैन सेठी और माता का नाम स्व. श्रीमती सोहनी देवी जैन था। आप तीन भाई और पाँच बहनों से संयुक्त परिवार के धनी थे, आपका विवाह अत्यन्त सुशील और धार्मिक श्रीमति संतरा देवी जैन के साथ हुआ था। नवीन, धर्मेन्द्र और पारस तीन पुत्रों और सरिता, कल्पना और रेखा तीन पुत्रियों से आपका घर सुशोभित हुआ, आपने सेंट जेवियर्स कॉलेज कोलकाता से बी.कॉम की उपाधि प्राप्त की।

सामाजिक अवदान

आपने अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के उच्च पदों पर रहकर सामाजिक क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। सन् १९८१ से अनवरत सन् २०२१ तक श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष पद पर अलंकृत रहें, इस पद पर रहते हुए अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार कराने के साथ सामाजिक एकता, सहिष्णुता एवं सद्भाव के लिए किए गए आपके प्रयत्न जैन इतिहास में अजर अमर रहेंगे। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अन्तर्गत श्री सेठी जी के द्वारा गठित 'धर्म संरक्षणी', 'तीर्थ संरक्षणी', 'श्रुत संवर्धिनी', 'महिला महासभा', 'युवा महासभा', 'राजनैतिक चेतना मंच', 'महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट', 'निर्ग्रन्थ सेंटर ऑफ आर्कोलोजिकल', 'ब्राह्मी सुन्दरी संगीत कला केन्द्र' ये नौ संस्थाएँ नवरत्न के रूप में सुविख्यात रहीं, जिनके माध्यम से आपने जैन संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के क्षेत्र में अनेक कार्य किये, साथ ही श्री गोपाल दिगम्बर जैन सिद्धान्त संस्कृत महाविद्यालय मुरैना, श्री दिगम्बर जैन कुण्डलपुर वैशाली, तीर्थक्षेत्र कमेटी आदि अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कीं। श्री बाहुबली स्वामी (गोम्मटेश्वर) महामस्तिकाभिषेक समिति के २००६ के स्वागताध्यक्ष पद को संभाल कर आपने कुशल निर्देशन का परिचय दिया तथा भगवान महावीर मैमोरियल समिति नई दिल्ली में गवर्निंग काउंसिल एवं चीफ पैट्रन की भूमिका का गरिमापूर्ण ढंग से निर्वहन किया, आप दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अयोध्या के संरक्षक भी रहे।

शैक्षणिक अवदान

श्री सेठी जी अद्भुत प्रतिभा के धनी थे, शैक्षणिक जगत में उनके योगदान को कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकता, अनेक शैक्षणिक संस्थाओं के महत्वपूर्ण पदों पर आसीन रहकर आपने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने एवं जैन विद्या के क्षेत्र में शोध कार्य हेतु प्रोत्साहित **शेष पृष्ठ २३ पर...**

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

।। ॐ अर्हम् ।। ।।श्री गुरूवेनमः ।।
जर्य भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी के
६४वें जन्म पर्व पर शत् शत् नमन

Anil Baid
Mob: 9376513210

Ak Packaging Industries
Manufacturing of: Corrugated Boxes / Sheets / Rolls / Multi Colour Boxes & Packing Material
Shed No. A-1 322/20, 40 Shed Area, G.I.D.C., Vapi, Dist. Valsad, Gujarat, Bharat- 396195
E-mail: akpackaging55@yahoo.com
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

!! ॐ अर्हम् !!
जय तुलसी जय महाश्रमण जय महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के
६४वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

Himmat Barmecha
Mob. : 98302 37615

Narpat Bothra
Mob. : 8444078567

Patrani®
Specialist in Embroidery Sarees & Ghagra Chunni
72, Burtolla Street, 2Nd Floor, Kolkata, West Bengal, Bharat-700007
e-mail :- patranisaree2010@yahoo.in

पृष्ठ २२ से... किया, देश और विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में आपने पुरातत्व और जैनधर्म पर व्याख्यान देकर जैन संस्कृति की महती प्रभावना की, उच्च मानदण्डों के अनुरूप शोध कार्यों के लिए शोधवृत्ति प्रदान कर आपने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने हेतु विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया, मौलिक प्राचीन जैनाचार्यों की कृतियों एवं विद्वानों के अनेक शोधग्रन्थों को प्रकाशित कराकर जैन साहित्य को प्रकाश में लाए। जैन गजट, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, श्रुत संवर्धिनी, जैन महिलादर्श आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करवाकर जैन सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे। विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ भारत के अनेक विश्वविद्यालयों और संस्थानों में जैन विद्या और पुरातत्व पर आपने अनेक सेमीनार आयोजित कराये।

जैन पुरातत्व का अन्वेषण

देश के शताधिक प्राचीन जैन तीर्थों और विभिन्न भागों में अवस्थित स्थानों पर पुरातत्व और इतिहास से जुड़े विद्वानों के साथ स्वयं जाकर वहाँ की विपुल सामग्री को प्रकाश में लाये तथा अमेरिका, यूरोप, एशिया, अफ्रीका महाद्वीपों के देशों में लगभग चालीस नगरों की यात्रा कर जैन पुरावशेषों विषयक सामग्री को खोजने का प्रयत्न किया, अनेक संगोष्ठियाँ आयोजित करवाई एवं स्वयं जैन पुरातत्व पर अनेक आलेख लिखकर जैन पुरावैभव से अवगत कराया।

धार्मिक अवदान

श्री सेठी जी परम जिनभक्त थे, आपकी जैन साधुओं पर अटूट आस्था थी, उनको आहार देना अपना परम कर्तव्य समझते थे। अभिषेक, पूजन और स्वाध्याय उनके नित्य की चर्या में सम्मलित थे, अनेक देशों में जाकर भी आपने अष्ट मूल गुणों के पालन में दोष नहीं लगने दिया, ऐसे महान् समाजसेवी का दिनांक २७ अप्रैल २०२१ में स्वर्गवास होने पर जैन समाज की अपूर्णनीय क्षति हुयी।

श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन जिनालय में विधि-विधान से हुयी वेदी प्रतिष्ठा

मुंबई: श्री १००८ शांतिनाथ दिगम्बर जैन सर्वतोभद्र जिनालय में वेदी शिलान्यास महोत्सव श्रद्धा, भक्ति के साथ पूरा हुआ, यह महोत्सव संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज की प्रेरणा, आचार्य समय सागर जी महाराज के आशीर्वाद तथा मुनि श्री सुधासागर जी महाराज के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया, कार्यक्रम में डॉ. श्री प्रदीप भैया 'सुयश' ने समस्त प्रतिष्ठा विधि का संचालन किया, जेवीपीडी स्कीम के गुलमोहर रोड स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में हुए इस महोत्सव में पृथ्वीराज कोठारी, एन. के. सेठी, प्रवीन जैन भाजपा विधायक अमित साटम, पूर्व विधायक गीता जैन, वल्लभ भंसाली, पी. सी. गोधा, मुकुल अग्रवाल, भरत मीठालाल जैन, निर्मल गोधा, सिद्धार्थ जैन, निर्मल जैन, ललित सरावगी, अनिल सिंघवी, के.सी. जैन, जमनालाल हपावत, मंदिर के ट्रस्टी तरुण काला, चिंतामणि सवाईलाल जैन परिवार एवं आयोजन समिति के प्रभात जैन आदि उपस्थित थे।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

64 वर्षीतप आराधकों का किया सम्मान

रतलामः सागोद रोड स्थित जैन स्कूल में श्री साधुमार्गी जैन श्री संघ ने ६४ वर्षीतप तपस्वियों का अभिनंदन किया। राम गुरु की जय-जयकार व संघ हमारा अविचल मंगल के गुणगान के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ, इसमें रतलाम, जावरा, खाचरोद, पिपलिया मंडी, निंबाहेड़ा, इंदौर, प्रतापगढ़, कानवन, नीमच आदि क्षेत्रों से वर्षीतप आराधक शामिल हुए।

सुबह ८.३० बजे श्री आदित्य मनी जी मसा., रोहित मुनि जी मसा., अटल मुनि जी मसा., उदित मुनि जी मसा., ब्रह्म ऋषि जी मसा., शकुंतला श्रीजी मसा., प्रीति सुधा जी मसा., दर्शना श्रीजी मसा., हितेषी जी मसा. आदि ठाणा के प्रवचन हुए। कार्यक्रम संयोजक मदनलाल कटारिया सभी इकाई के पदाधिकारी, मंत्री अशोक पिरोदिया, समता युवा संघ महिला मंडल, बालक मंडल, बहु मंडल, बालिका मंडल आदि ने अपनी बात कही। संघ के प्रीतेश गादिया ने 'जिनागम' को बताया कि सभी पदाधिकारियों ने तपस्वियों को कुमकुम चावल लगाकर शॉल, माला अभिनंदन-पत्र के द्वारा उनका अभिनंदन किया गया व इक्षु रस से पारणा करवाया। श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ के पदाधिकारी और परिवारजन ने भी तपस्वियों का अभिनंदन किया। अखिल भारतीय संघ से विशेष रूप से अतिथि के रूप में उपस्थित अजीत चेलावत, कमल पिरोदिया, चंद्रशेखर जैन, अभय चोपड़ा, चित्रेश मेहता, सचिन खरीवाल, रितेश मेहता, मनोज पीपाड़ा, अशोक जैन, मोतीलाल मूणत, राजकुमार बाफना आदि उपस्थित रहे, इस दौरान बाबूलाल सेठिया, सुदर्शन पिरोदिया, चंदनमल पिरोदिया, निर्मल मूणोत, निर्मल लूनिया, ललित कोठारी, विकास छाजेड़, रमेश कटारिया, विनोद मेहता, सुशील गोरेचा, संजय कोठारी आदि उपस्थित रहे।

- अभय चोपड़ा, रतलाम

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO®
An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

जैन धरोहर दिवस समारोह पूर्वक संपन्न

रायपुरः श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा एवं सेठी ट्रस्ट दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में वैश्विक स्तर पर मनाये जा रहे २७ अप्रैल 'जैन धरोहर दिवस' के अवसर पर छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में फाफाडीह स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पूज्य १०५ अंतर्मती माताजी के संघ सानिध्य में एक धर्म सभा में उपस्थित जनों के द्वारा देश-विदेश में अव्यवस्थित अपनी पुरानी संपदा के संरक्षण का संकल्प लिया गया तथा दिगम्बर जैन महासभा के स्वर्गीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान निर्मल कुमार सेठी को उनकी चतुर्थ पुण्यतिथि पर विनयांजलि दी गई। कार्यक्रम को मुख्य रूप से श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कैलाश रारा ने संबोधित किया। छत्तीसगढ़ के कार्यक्रम को सफल बनाने में महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष गजेंद्र पाटनी, पारस चैनल के डायरेक्टर प्रकाश मोदी, नागपुर प्रांतीय दिगम्बर जैन खंडेलवाल सभा के सभापति मनोज पहाड़िया, सहसभापति राजकुमार गंगवाल, दैनिक विश्व के संपादक प्रदीप जैन, तीर्थ संरक्षिणी सभा के प्रांतीय सचिव अरविंद जैन, खंडेलवाल दिगम्बर जैन पंचायत के अध्यक्ष अरविंद बड़जात्या, सचिव सुरेश पाटनी, कोषाध्यक्ष पवन रारा, संरक्षक सुधीर बाकलीवाल, धर्मचंद बाकलीवाल एवं विभिन्न मंदिर कमेटीयों के अध्यक्षों की भूमिका उल्लेखनीय रही।

-कैलाश रारा, रायपुर

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

Samrat Jewellers SJ
नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें
अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन
३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

!! ॐ अर्हम् !!

'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

ANANDMUL CHALLANI JAIN
Ex. National President
All India Swetamber Sthanakwasi Jain Conference-New Delhi
2, Ritherdon Avenue, Ritherdon Road,
Opp: Nilgiris, Vepery, Chennai,
Tamilnadu, Bharat-600 007
Mob. : 9841030035, 9380072199
Email : rjachallani@gmail.com

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के
६४वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

स्व. सुमेरमल सुराणा
३७ वें पुण्यस्मरण पर अभिवादन तथा
भावभीनी श्रद्धांजलि!

युग प्रधान गणाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञजी एवं
आचार्य श्री महाश्रमणजी के परम अनुयायी तथा आपके त्याग, तप, गुरुभक्ति एवं पुरुषार्थ के अनोखे
धर्म भावों को देखकर आचार्य श्री तुलसी के द्वारा
लाडनुं (राजस्थान) में 'प्रामाणिक प्रवर' के उच्च सम्मान से अलंकृत सन्मार्ग दीपक

रीखबचंद, चांदमल, ललित, राजेश, विनय

धन होकर भी सादा जीवन,
जिसकी सुंदर एक प्रतिमा थी,
अनुशासन और संत समागम
'समीर' तुम्हारी एक प्रतिमा थी

''सदा धर्म के पथ पर चलकर
जिया अनोखा जीवन आपने
राग-द्वेष को निष्कासित कर
किया अनूठा जीवन आपने

आचार्य श्री भिक्खु और
महावीर के शासन को
अपनाया आपने जीवन की
हर घड़ियों में अनुशासन को

एवं समस्त सुराणा परिजन, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत-४३१००१
(राजस्थान में राणावस-मारवाड़)

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Partner's
Karni Soft Solution Pvt. Ltd.
Aligning IT to BUSINESS
IBM infor

Services Offered
- ERP
- SCM
- PLM
- BI
- IBP Solution
- Digitalization
- Customer & Supplier Portal

Contect Us:
Delhi Office: F-6/10, Krishna Nagar, 3rd Floor New Delhi-110051 (India).
Kolkata Office: 1, Chandney Chowk Street, 1st Floor, B-Block, Room No.7, Kolkata-700072
Ph.: +91 99710 96596
Email: Umedsethia@karnisoftsol.com
Website: www.karnisoftsol.com
Social Media: Facebook: Karni-Soft-Solutions-Pvt-Ltd
Twitter: https://twitter.com/karnisoftsol

आचार्य विशुद्ध सागर जी बने पट्टाचार्य

इंदौर: 'आप लोगों को किसी को कोई एतराज तो नहीं है, बताईये ना, मैं आप सभी लोगों से पूछ रहा हूं, मैं मुनिराजों से पूछ रहा हूं, मुनिराज अपने-अपने हाथ ऊपर उठाएं, एक हीरा मैं आपको सौंप रहा हूं, पट्टाचार्य सौंप रहा हूं आपको, आपकी जिंदगी के लिए सौंप रहा हूं' ये शब्द जैसे ही गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी के मुखारबिंद से निकले, उनके बायें तरफ विराजे आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी की आंखें नम हो रही थी, अब वो जलकण आंखों समा नहीं पा रहे थे, छलक रहे थे, भाव विभोर हो गये थे, आखों को बार-बार पोंछना, स्पष्ट संकेत कर रहा था कि ऐसे ही समाज से विकृतियों को निकालने का भार अब इन कंधों पर है, चेहरे से मुस्कुराहट कुछ क्षणों के लिए गायब हो गई और गंभीरता की चादर मानो लिपट गई, वातानुकूलित पंडाल भी अब उसी तपन को महसूस कर रहा था, जो बाहर सूरज की किरणों से धरा महसूस कर रही थी, हजारों की संख्या से भरा पूरा पंडाल अनुमोदना कर रहा था। १५ सैकेंड बाद शब्द गूंजे- 'हो गया, हो गया'। पंडाल जयकारों से गूंज रहा था, फिर आवाज आई - देखिये गुरुवर के ज्येष्ठ गुरु भाई पुष्पदंत सागर मुनिराज ने ये घोषित कर दिया और हमारे संघ ने, सभी आचार्यों ने, सभी उपाध्याय परमेष्ठि यों ने सभी गणिनी आर्यिका माताओं ने ब्र. ब्रह्मचारिणी और सभी दीदियों, सभी भैया जी ने, सकल समाज ने और यहां तक अखिल भारतीय विद्वत परिषद विद्वानों ने हर्ष के साथ स्वीकार किया कि आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज को दिया गया पट्टाचार्य पद स्वीकार्य है और फिर उठे उद्घोष ने जैसे पंडाल को गुंजायमान कर दिया, सभी की यही अनुमोदना और सभी का यह भाव, इस बीच गणाचार्य पुष्पदंत सागर जी ने कहा आप लोगों को यह ज्ञात होना चाहिये कि मैंने आपके अभाव को पूर्ण किया है, आपके अंदर जो अभाव उत्पन्न हो गया था,उसे आज मैंने पूर्ण कर दिया है। आचार्यों, उपाध्याय परमेष्ठी ने पाद प्रक्षालन किया और पुरानी पिच्छी मनीष गोधा, सपना गोधा को प्रदान की गई, उन्हें प्रवर्तक, गणधर, उपाध्याय, निर्यापक पिच्छी, कमण्डलु दिया, जो फिर पट्टाचार्य के हाथों से पाकर निहाल हो गये। गणिनी आर्थिकाओं ने गुरुवर को शास्त्र भेंट किया। संदीप बोहरा जी ने इस अवसर पर एक विशेष भजन की प्रस्तुति दी। सुमति धाम में पैर रखने की जगह नहीं थी।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

!! ॐ अर्हम् !!
सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६४वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन
कमलेश-09425260101 बंशीलाल-09425260301 योगेश- 7587253148
गर्व्हमेंट कॉन्ट्रॅक्टर, सुकमा
श्रद्धानवत्
बंशीलाल-शारदा, कमलेश - सरिता, योगेश - निशा, धैर्य, सम्यक्, दर्शन, रिशिका, कृतिका एवं समस्त नाहटा जैन परिवार, सुकमा (छ.ग.)
नाहटा ब्रदर्स
बर्तन एवं हार्डवेयर के विक्रेता
राजवाड़ा रोड, पो. सुकमा, जि. दंतेवाड़ा, छत्तीसगढ़, भारत- 494111,
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

भायंदर में सकल संघ ने मनाया महावीर जन्म कल्याणक

मुंबई: तीर्थंकर महावीर ने जीवदया, अहिंसा और मानवमात्र की सेवा के लिए जो रास्ता बताया है, आज के युग में वह और भी प्रासंगिक हो गया है। अगर लोग महावीर की बातों पर चलें, तो विश्व की सभी समस्याओं का समाधान खुद व खुद हो जाएगा, ये कहना है मीरा-भायंदर, वसई-विरार के पुलिस कमिश्नर मधुकर पांडेय का, जो महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव पर बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

समस्त राजस्थानी जैन संघ भायंदर पूर्व द्वारा आयोजित इस महोत्सव से पूर्व अहिंसा यात्रा निकाली गई, जो शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई ओस्तवाल बगीचा पहुंची, जहां धर्मसभा हुई। यात्रा में शामिल युवा और महिलाएं महावीर के संदेश लिखे पोस्टर लेकर पूरे रास्ते त्रिशला नंदन वीर के जयघोष करते हुए चल रहे थे, इस दौरान यात्रा का स्वागत किया गया और जलपान की व्यवस्था की गई। अहिंसा यात्रा के चलते पूरे भायंदर पूर्व का इलाका अहिंसामय हो गया था। संघ अध्यक्ष उमरावसिंह ओस्तवाल के नेतृत्व में हुए कार्यक्रम में समाज के बच्चों ने महावीर के जीवन पर प्रस्तुति दी और अतिथियों ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री ओस्तवाल ने कार्यक्रम में पधारे लोगों का स्वागत करते हुए आभार ज्ञापित किया। संघ के कार्याध्यक्ष दिलीप जैन, महामंत्री सुन्दरलाल लोढा, कोषाध्यक्ष मांगीलाल पामेचा, प्रसार मंत्री एवम ओसवाल उत्कर्ष मंडल के अध्यक्ष प्रविण लुणावत तथा दिनेश चौधरी, संगठन मंत्री निर्मल जैन के प्रयासों से संपन्न आयोजन में जेसलपार्क राजस्थानी जैन संघ के कार्याध्यक्ष

अतुल पाडलेचा, कोषाध्यक्ष हरीसिंह नाहर, मंत्री मनोज चोपडा, मेवाड संच भाईन्दर के अध्यक्ष तेजप्रकाश मेहता, मंत्री संपत पामेचा, कोषाध्यक्ष धर्मेश सुराणा, तेरापंथी सभा भायंदर के अध्यक्ष दिलीप बाफना, मंत्री रूपसिंह गोठी, कोषाध्यक्ष अरविंद हिंगड, प्राज्ञ जैन संघ के अध्यक्ष महेन्द्र मेहता, मंत्री अभिषेक भटेवड़ा, खतरगच्छ संघ के नरेन्द्र कोचर एवं कुलदीप ओस्तवाल आदि की उपस्थिति रही, सभी महिला मंडलों और युवाओं की सक्रियता से यह आयोजन सफल रहा। संचालन दिनेश ओस्तवाल ने किया।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

अंबेडकर जयंती के उपलक्ष में के. पी. अग्रहारा युवा संगठन द्वारा मागड़ी रोड सरकारी स्कूल खेल मैदान में क्रिकेट स्पर्धा 'जय भीम' ट्रॉफी २०२५ का आयोजन किया गया, स्पर्धा में १६ टीमों ने हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी महेन्द्र मुणोत ने बाबा साहेब डॉ. भीमरावजी अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित करके उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर केंगेरी में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी महेन्द्र मुणोत ने डायग्नोस्टिक सेंटर की स्वच्छता, व्यवस्था एवं सेवा के प्रति संतोष व्यक्त करते हुए रु. १,२५,०००.०० की सहयोग राशि का चेक प्रदान किया। तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरी नगर के अध्यक्ष बिकास छाजेड़, मंत्री सुपारस पटावरी, पूर्व अध्यक्ष विकास छाजेड़, सरल पटावरी एवं अन्य सदस्यों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

माँ दुर्गा पूजा समिति ट्रस्ट अंदरहल्ली नाइस रोड के निकट दुर्गा देवी मंदिर में चैत्र नवरात्रि महोत्सव का आयोजन किया गया। स्थानीय कलाकारों ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति दी, जिससे माहौल भक्तिमय हो गया। मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी महेन्द्र मुणोत, राजस्थान पत्रिका के संपादकी प्रभारी कुमार जिवेन्द्र झा व संजय मिश्रा ने देवी माँ के दर्शन कर मंदिर परिसर में नवनिर्मित भवन का फीता काटकर उद्घाटन किया। ट्रस्ट के पदाधिकारी पी के सिंह, पी एस पांडे, राम प्रवेश महतो, नारायण यादव एवं अन्य सदस्यों ने अतिथियों को सम्मानित किया।

ए.एस.सी. महाविद्यालय राजाजीनगर में अंतर महाविद्यालय उत्सव संभव २०२५ का आयोजन किया गया, जिसमें २५ से भी ज्यादा महाविद्यालयों के ४०० विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। २० से भी ज्यादा स्पर्धाओं का आयोजन था। विशिष्ट अतिथि युवा समाजसेवी विद्यार्थी मित्र महेन्द्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा, 'राष्ट्र सेवा के लिए जरूरी नहीं कि कोई नेता या अधिकारी बने, सामान्य नागरिक भी अपने कर्तव्यों का सही पालन करें तो वह भी राष्ट्र सेवा है' महाविद्यालय के सहायक प्राचार्य विजय कुमार, नागेंद्र बी एल, गणपति भट्ट एवं विश्व आराध्य ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

श्री कुव्हेंपू गलियारा बलेगा वृंदावन नगर द्वारा आयोजित तीसरे वार्षिकोत्सव श्री अन्नम्मा देवी, श्री बंडी महाकाली देवी उत्सव कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि युवा समाजसेवी विद्यार्थी मित्र महेन्द्र मुणोत ने देवी माँ के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं जरुरतमंद बच्चों में शिक्षण सामग्री वितरित की. आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

विजयनगर यूनाइटेड स्पोर्ट्स एंड कल्चरल एसोसिएशन द्वारा हंपी नगर स्थित चंद्रशेखर आजाद खेल मैदान में फुटबॉल स्पर्धा पुनीत राजकुमार मेमोरियल कप का आयोजन किया गया, जिसमें १५ से भी ज्यादा टीमों ने हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी विद्यार्थी मित्र महेन्द्र मुणोत ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए अपने वक्तव्य में कहा 'स्वस्थ रहने के लिए खेलकूद एवं व्यायाम अति आवश्यक है.' आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया। उक्त सभी जानकारी भूपेन्द्र एस. भानावत ने विज्ञप्ति द्वारा 'जिनागम' पत्रिका को भेजी है।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

आचार्य श्री समय सागर जी म. सा.

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी म.सा. के चरणों में सत-सत् नमन!

तराचन्द जैन
अध्यक्ष
झारखण्ड राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड, झारखण्ड सरकार
Mob: 9431132024/ 9931482805
मुख्य कार्यालयः E २/८, साकेत नगर, हिनू, राँची, झारखण्ड, भारत
क्षेत्रीय कार्यालय : जैन मन्दिर परिसर, देवघर, झारखण्ड, भारत
email: tcjaindeoghar@yahoo.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

भारत गौरव मनोज्ञाचार्य
श्री पुलक सागर जी के जन्म दिवस का
कोटि-कोटि वंदन

DILIP PANDYA
CHAINSUKH GAMBHIRMAL PANDYA
Pandya Bhawan
Kuchaman City
DiAn Group
702, Astron Tech Park, Satellite Road, Near Iscon Circle,
Ahmedabad, Gujarat- 380015 Ph: 022-67432001 to 03
Email: dilippandya.katarialogitrans@gmail.com/ dilipnpandya@gmail.com
www.klogglobal.com /dilip.pandya@diainfralog.com

श्रद्धाश्रेय निर्मल जी को मेरा प्रणाम

आसामः श्री दिगम्बर जैन समाज तिनसुकिया ने २७ अप्रैल २०२५ रविवार को जैन महासभा के भुतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रद्धेय स्वर्गीय श्री निर्मल कुमार जी सेठी की विनयांजलि सभा का तिनसुकिया समाज के अध्यक्ष श्री विजय कुमार जी पाटनी, सचिव श्री पुखराज जी बाकलीवाल एवं निर्मल जी सेठी के भ्राता श्री हुलासचंद जी सेठी के पुत्र श्री सुखमाल जी सेठी ने दीप प्रज्वलित करके आयोजन किया। इस आयोजन में तिनसुकिया जैन समाज के अध्यक्ष श्री विजय कुमार जी पाटनी (विजय जी दिगंबर जैन महासभा धर्म संरक्षिणी के उपाध्यक्ष भी हैं) तिनसुकिया समाज के सचिव श्री पुखराज जी बाकलीवाल ओर संयुक्त सचिव श्री अजीत जी छाबड़ा भी उपस्थित थे।

आयोजन में अध्यक्ष श्री विजय जी पाटनी ने कहा कि निर्मल जी दिगम्बर जैन महासभा के सबसे लम्बे समय यानी सन् १९८१से २०२१ (४०) वर्षो तक अध्यक्ष पद पर थे, इस कार्यकाल में उन्होंने जैन विरासत और पुरातत्व के प्रचार प्रसार, जिर्णोद्धार ओर संरक्षण में बहुत बड़ा योगदान दिया था। श्री विजय जी ने यह भी कहा कि निर्मल जी का पूर्वोत्तर में लगभग १५ दिन का धार्मिक भ्रमण सिलिगुड़ी से लेकर आसाम, अरूणाचल, मणीपूर, नागालैण्ड का हमलोगों के साथ होता रहा, इस दौरान मेरे नेतृत्व में की गई व्यवस्था की श्री निर्मल जी ने सराहना भी की थी और निर्मल जी ने इस दौरे को जीवन का यादगार दौरा बताया।

निर्मल जी भारत ही नहीं विदेशों मे भी जैन धर्म एवं जैन धर्म के इतिहास, विरासत और पुरातत्व के अनुसंधान जैसे कई अभियानों का व्यक्तिगत रूप से नेतृत्व किया था, तिनसुकिया समाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपने विचार रखे और कहा कि २७ अप्रैल २०२१ को जैन समुदाय को बड़ी क्षति हुई थी क्योंकि इसी दिन से निर्मल जी हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन हमारी याद में आज भी हैं, हम सभी ने इस दिन को 'जैन धरोहर दिवस' के रूप में मनाया ओर आगे भी मनायेंगे।

- अध्यक्ष-विजय पाटनी, सचिव-पुखराज बाकलीवाल
श्री दिगम्बर जैन पंचायत, तिनसुकिया, आसाम, भारत

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ में मुनिश्री की प्रेरणा से एम्बुलेंस चिकित्सालय ट्रस्ट को समर्पित

राजगढ़ (धार): श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. पेढ़ी ट्रस्ट श्री मोहनखेड़ा तीर्थ द्वारा संचालित गुरु राजेन्द्र जैन चिकित्सालय मोहनखेड़ा महातीर्थ में श्री गुरु राजेन्द्रसूरी हास्पिटल एवं स्वास्थ्य विभाग धार के संयुक्त तत्वाधान में निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण (चेकअप) शिविर का भव्य आयोजन १८ से २० अप्रैल २०२५ तक का हुआ, जिसमें गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टालंकार वर्तमान गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा., मुनिराज श्री पुष्पेन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री रुपेन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री जीतचन्द्रविजयजी म.सा. एवं साध्वी श्री तत्वलोचनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विरागयशश्रीजी म.सा., साध्वी श्री हर्षवर्धनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चिकित्सालय परिसर में मरीजों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो, जल्द ही अपने रोगों से मुक्त हों और शीघ्र मरीज, चिकित्सालय तक पहुंच जाये, ऐसी भावनाओं को लेकर आचार्य भगवन्त व मुनि भगवन्तों एवं साध्वीवृंदों की सानिध्यता में मुनिराज श्री जीतचन्द्रविजयजी म.सा. की प्रेरणा से फालना निवासी कांतीलालजी मानमलजी परिवार व पुत्र जीतु भाई द्वारा चिकित्सालय ट्रस्ट को 'एम्बुलेंस' भेंट की गई है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला स्वास्थ्य एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. आर. के. शिंदे एवं विशेष अतिथि के रुप में जिला टीकाकरण अधिकारी नरेन्द्र पवैया, जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष पण्डित छोटु शास्त्री, श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ मेनेजिंग ट्रस्टी सुजानमल सेठ व निःशुल्क दवाई वितरण के लाभार्थी, एम्बुलेंस के लाभार्थी, चिकित्सालय के साज सज्जा के लाभार्थी व शिविर के आयोजक लाभार्थी परिवार व चिकित्सालय के ट्रस्टीगणों ने प्रभु श्री पार्श्वनाथ भगवान, दादा गुरुदेव व चिकित्सालय के संस्थापक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलन किया।

गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने आर्शीवचन में कहा कि गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने जीवनकाल में हमेशा गौशाला और चिकित्सालय की चिन्ता की और हमेशा यहां के काया कल्प में अपना योगदान दिया और इन दोनों संस्थाओं को चरम शिखर तक पहुंचाने का प्रयास किया । सुबह से लेकर शाम तक अपने गुरु भक्तों को गौशाला एवं चिकित्सालय के लिये प्रेरणा प्रदान करते रहते रहे। मैं मुनिराज श्री जीतचन्द्रविजयजी म.सा. को प्रेरणा देते हुए कह रहा हूँ की आप गौशाला और चिकित्सालय के प्रति मेहनत करते रहें, जहां भी आपको तकलीफ आये आप मुझसे सहयोग की अपेक्षा रखें, मैं आपको हर सम्भव सहयोग प्रदान करता रहूंगा, इस अवसर पर मुनिराज श्री पुष्पेन्द्रविजयजी म.सा. ने कहा कि मुनिश्री ने एक अच्छा संकल्प लिया है और वे इस चिकित्सालय के संकल्प की कसौटी पर हमेशा खरे उतरेगें, क्योंकि इनको आचार्य श्री ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का पूर्ण आशीर्वाद मिला हुआ है। मुनिराज श्री जीतचन्द्रविजयजी म.सा. ने कहा कि मेरे दादा गुरुदेव, मेरे दीक्षा गुरु आचार्य श्री ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. व वर्तमान गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्री हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का मुझे पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है, इनका सहयोग भी मुझे पूर्ण रुप से मिल रहा है, हम निकट समय में और भी केम्प लगायेगें। दुःखी दर्दी की सेवा करेगें। साध्वी श्री विरागयशाश्रीजी म.सा. तीर्थ के मेनेजिंग ट्रस्टी सुजानमल सेठ, समाजसेवी अशोक भण्डारी, झाबुआ के समाज सेवी यशवंत भण्डारी आदि ने भी सभा को सम्बोधित किया, इस अवसर पर मुनिराज श्री जीतचन्द्रविजयजी म.सा. ने जोधपुर निवासी ओमप्रकाशजी संचेती एवं पुना निवासी मनोजकुमार गिरीया मेहता को चिकित्सालय ट्रस्ट में ट्रस्टी पद से मनोनित किया। मुनिश्री की प्रेरणा से इस शिविर में 'धार' से आई रक्तदान टीम को बड़ी संख्या में रक्तदान दाताओं ने रक्तदान दिया, कार्यक्रम में चिकित्सालय ट्रस्ट की और से ट्रस्टी हीरालाल मेहता, प्रकाश सेजलमणी, रणजीत शाह, पंकज जैन धार आदि ने पधारे हुए सभी अतिथियों एवं लाभार्थी परिवारों का बहुमान किया।

चिकित्सालय ट्रस्ट के मेनेजिंग ट्रस्टी हीरालाल टी. मेहता, ट्रस्टी पंकज जैन धार ने 'जिनागम' को बताया कि तीसरे दिन डॉ. आशा पवैया (नाक कान गला व स्त्रीरोग), डॉ. सौरभ बोरासी (नेत्र रोग), डॉ. राजेश गुप्ता, डॉ. अलका गुप्ता, डॉ. हेमन्त आर. नरगावे (हृदय एवं पेट रोग), डॉ. पुजा गुप्ता (त्वचा रोग), डॉ. सतीश परासर, डॉ. एस. खान, डॉ. योगेश तवर, ममता परासर अपनी सेवाएं निरन्तर प्रदान की है। शिविर में सभी मरीजों को निःशुल्क भोजन एवं निःशुल्क दवाईयों का वितरण की गई। उक्त जानकारी अस्पताल प्रबंधन से मेहताब सिंदल एवं श्रीमती बरखा मेहता द्वारा ईमेल के द्वारा दी गई है। ट्रस्टी श्री प्रकाश सेजलमणी, रणजीत शाह, अशोक भण्डारी, यशवन्त भण्डारी, कैलाश सकलेचा, जीतेन्द्र बाबेल, संजय मेहता, मफतलाल जैन, मनोज जैन पुना, कांतीलाल जैन, जीतु भाई, धर्मेश जैन, जितेश भाई शाह, ओमप्रकाश संचेती, पारसमल कांकरिया विशेष रुप से उपस्थित थे।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत गौरव मनोज्ञाचार्य श्री पुलक सागर जी के
अवतरण दिवस पर कोटि-कोटि वंदन

Suresh Kothari
Mob.: 98694 64161

Pradip Kothari
Mob.: 98204 44161

Vicky Bafna
Mob.: 9820097619

NAVKAR
FURNISHINGS
SINCE 1996
Experience the magic in home living

One Of The Leading Manufacturer
- Mattress
- Wallpaper
- Blinds
- Sofa & Dining Chair
- Head Board
- Pillow & Cushion

Showroom No. 4, Shri Vinayak Bldg, Plot 226, Sector-5, Near Apna Bazar, Charkop, Kandivali (West), Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400067
Tel: 9920444664 | Email: navkarfurnishing1996@gmail.com

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६४वें जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन

Umed Singh Vidhaan Dugar

PRAGYA PACKAGING PVT. LTD.

Manufacturer Of Bottles Caps And Induction Sealing Wads

Factory: Plot No 27/B/3 Ida Kattedan R.R. District Telengana, Bharat-500077
Off. 104, Alkarim Trade Centre, M.G. Road, Rani Ganj, Secunderabad, Telangana, Bharat-500003 |
Emai: dugar.u.s@gmail.com | Mob.: 9989434411

साधुमार्गी जैन श्री संघ ने आचार्य रामेश जी की जयंती पर निकाली प्रभात फेरी

रतलामः श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ द्वारा आचार्य श्री रामलाल जी मसा. की ७३वीं जन्म जयंती के उपलक्ष में प्रभात फेरी निकाल कर कई धार्मिक आयोजन किये, उपरोक्त जानकारी देते हुए संघ के प्रीतेश गादिया ने 'जिनागम' को बताया की प्रभात फेरी सुबह ७:३० बजे समता सदन, घास बाजार से प्रारंभ होकर चोमूकीपुल, चांदनी चौक, बजाज खाना, गणेश देवरी, धानमंडी, शहर सराय, सैलाना बस स्टैंड होते हुए समता भवन कारजू नगर पर पहुंची, जिसमें पुरुष सफेद वस्त्र एवं महिलाएं केसरिया परिधान धारण के साथ राम गुरु की जय जयकार के साथ निकले, इस अवसर पर समाज के बालक-बालिकाओं से लेकर वृद्धजन भी प्रभात फेरी में शामिल हुए थे। धार्मिक गीत के साथ संपूर्ण प्रभात फेरी में आचार्य श्री का गुणगान हुआ, तत्पश्चात काराजू नगर स्थानक पर विराजित शासन दीपक रोहित मुनि जी मसा. ब्रह्मऋषि जी मसा. प्रीति सुधा जी मसा. आदि ठाणा, शकुंतलाश्रीजी मसा. आदी ठाणा, श्री रूपयशा श्रीजी मसा. द्वारा प्रवचन में आचार्य श्री के दीक्षा तिथि से लेकर आज तक के कई प्रसंग फरमाकर उनका गुणगान किया, कहा कि आचार्य श्री रामेश जी की कथनी और करनी एक समान है, ऐसी कई बातों को धर्म सभा में प्रकाश डाला गया, साथ ही साथ रामेश चालीसा का वाचन भी धर्म सभा द्वारा किया गया।

संघ अध्यक्ष कांतिलाल छाजेड़, महिला मंडल अध्यक्ष संगीता मूणत, बहुमंडल अध्यक्ष सोनाली गोलेछा ने भी अपने भाव रखे। कार्यक्रम में मंत्री अशोक पिरोदिया, मदनलाल कटारिया, हिम्मत कोठारी, चंदनमल छाजेड़, बाबूलाल सेठिया, चंदनमल पिरोदिया, सुदर्शन पिरोदिया, कपूर कोठारी, अतुल बाफना, ललित कोठारी, निर्मल मूणत, निर्मल लूनिया, सुशील गोरेचा, विकास छाजेड़, विनोद मेहताम राजेश सियार, मणिलाल घोटा, सुमित कटारिया, रवि कटारिया, सुनील कोठारी, रमेशचंद्र कटारिया, दशरथ बाफना, प्रकाश कोठारी, संजय कोठारी, प्रकाश नंदेचा, कमल पिरोदिया, श्रेणिक मांडोत, अभय चोपड़ा, महिला मंडल संगीता मूणत, बहु मंडल की सोनाली गोरेचा, रिंकु कोठारी, युवा संघ से अर्पित गांधी, अर्पित बाफना, बालक मंडल के ऋषभ मूणत, नमन कोठारी बालिका मंडल के परी लासोड आदि कई उपस्थित थे।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत जैन महामंडल के कार्यक्रम में जैन एकता का शंखनाद

मुंबई: भारत जैन महामंडल के तत्वावधान में दादर स्थित योगी सभागृह में श्रमण तीर्थंकर महावीर स्वामी जन्मकल्याणक महोत्सव महाराष्ट्र के राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन के मुख्य आतिथ्य में हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। मंगलाचरण आचार्य नयपद्म सागर सूरीश्वर ने किया, इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि मेरे जीवन में नवकार मंत्र की विशेष महत्ता है और मैं पूरी श्रद्धा के साथ इसे प्रतिदिन करता हूँ, उन्होंने संस्थाध्यक्ष सी. सी. डांगी की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने समग्र जैन समाज को एकमंच पर लाकर जो एकता का मिशन प्रारंभ किया है, यह निश्चित ही सफल होगा, ऐसा मुझे विश्वास है। महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने कहा कि भले ही मैं जन्म से जैन नहीं हूं, पर कर्म और जीवनशैली से पूरी तरह जैन सिद्धांतों का पालन करता हूँ। कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा ने महामंडल की १२५ वर्षों की यात्रा को ऐतिहासिक बताया और कहा कि संस्था जैन समाज को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है। हरकचंद सांवला, जो कैंसर रोगियों के लिए पिछले ३५ वर्षों से सेवा कार्य कर रहे हैं, उन्हें इस अवसर पर विशेष सेवा प्रदाता सम्मान उपाधि से सम्मानित किया गया, सभी अतिथियों सहित समारोह में मौजूद राज्यसभा सांसद मिलिंद देवड़ा, पूर्व सांसद विजय दर्डा, पूर्व मंत्री राज के. पुरोहित, जैन माइनॉरिटी फेडरेशन अध्यक्ष ललित गंधी का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष सुमाष रुणवाल, सुमतिलाल कर्णावट, के. सी. जैन, विनय जैन, अनिल खिंवेसरा, पंकज झामर सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

'शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा जैन समाज' आचार्य नयपद्मसागर सूरीश्वर म.सा. ने कहा कि महावीर स्वामी, जिन्होंने परिवार को त्याग कर संपूर्ण मानवता को अपना परिवार माना, उनके आदर्श भारतीय संस्कृति में सर्वोपरि हैं, उन्होंने मुंबई के सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यदि सरकार ये विद्यालय जैन समाज को सौंपे, तो समाज इन्हें संस्कारयुक्त और गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के केंद्र में परिवर्तित करेगा, इस अवसर पर साध्वी परमअस्मिता म.सा., परमसूमधी मसा. सहित साध्वीबंद ने भी विचार व्यक्त किए।

'भारत को विश्वगुरु बनाना है तो अपनाएं महावीर की शिक्षाएं' संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष सी.सी. डांगी ने कहा कि तीर्थंकर महावीर का जीबन मानवता के लिए समर्पित रहा है, बदि हमें भारत को विश्वगुरु बनाना है तो हमें उनकी शिक्षाओं को जीवन में अपनाना होगा, उन्होंने जैन समाज की एकता पर बल देते हुए कहा कि संप्रदायवाद से ऊपर उठकर हमें एकजुट होना होगा। श्री डांगी ने अपने अंदाज और मारवाड़ी भाषा में दिए भाषण से श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन भी किया, महावीर की शिक्षाएं दिल और दिमाग में उतरनी चाहिए। राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन ने कहा कि तीर्थंकर महावीर इस महान भूमि के ऐसे सपूत थे, जिन्होंने आत्मा की सर्वोच्चता को प्राप्त कर तीर्थंकरत्व को प्राप्त किया, उनकी शिक्षाओं को आत्मसात करना समय की आवश्यकता है, उन्होंने संस्था के १२५ वर्षों की यात्रा को कीर्तिमान बताया। संगठन की मासिक 'जैन जगत' के तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक अंक का विमोचन किया, इस अवसर पर महेन्द्र पगारिया, सुरेन्द्र दस्सानी, संयुक्त महामंत्री अनिल खिवेसरा, कोषाध्यक्ष मनोहर पारख, महिला अध्यक्ष, राजकुमारी बोहरा, परामर्शदाता किशनलाल दुग्गड़, रमणलाल लुंक्कड़, भूपेश कोठारी, कुमार बोहरा, प्रशांत झवेरी, विकास कांकरीया, यशवंत जैन, उत्तम शाह, गणपत डागलिया, भैरूलाल लोढ़ा, प्रकाश नाहर, फूलचंद नाहर, रमेश कुकडा, सुरेश सिंघवी, महेंद्र चौरड़िया सहित सदस्य उपस्थित रहे। संचालन बाबूलाल बाफना ने किया, यह जानकारी अजय मरोडिया ने 'जिनागम' पत्रिका को भेजी है।

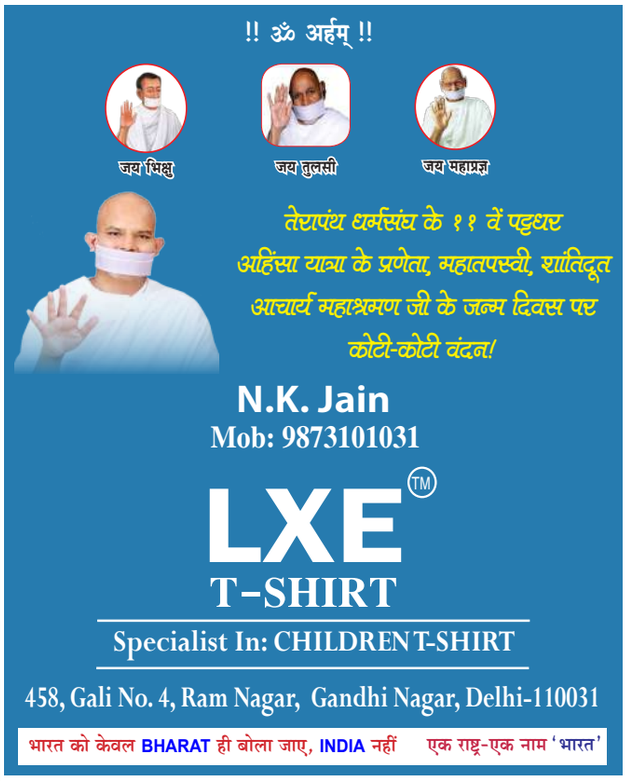

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

!! ॐ अर्हम् !!
जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

Gajendra, Rajshree, Divya & Deepanshu Jain

MARBLE SHOPPE

A House of Marbles and Granites

Metro Pillar No. 11, Marble Market, Sikander Ghosi, M.G. Road, Gurgaon, Haryana, Bharat- 122001
E-mail: marbleshoppe@gmail.com | Mob.: 8588821481

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें
हम-सब जैन हैं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

MEGHNA ENTERPRISES

RAJEEV T. HIRAWAT & MANAV R. HIRAWAT

Fw 9012, Bharat Diamond Bourse,
Bandra Complex, Opp Asian Heart Institute Hospital,
Gate 11, Bandra East, Mumbai,
Maharashtra, Bharat -400051
Tel.: 022-2369 05 38, Fax. 022-2369 0539

चेन्नई में एक नई शुरुआत

जैनों ने जैनों के लिए प्लेटिनम भावांजली संस्था का गठन किया है। शायद जैनों की भारत भर में यह प्रथम संस्था होगी जो जैनों ने जैनों के लिए ७० वर्ष की उम्र पार के बुजुर्गो का विशेष ख्याल रखने के लिए बनाई है। वर्तमान में इस का कार्य क्षेत्र चेन्नई है। चेन्नई में रहने वाले जैन जरूरतमन्द बुजुर्गो की सेवा का इस समिति ने अपना लक्ष्य बनाया है। संस्था ने ७० वर्ष उम्र पार बुजुर्गो के लिए मनोरंजन एवम् समय बिताने के लिए एक सेन्टर स्थापित किया है, यह सेन्टर सुबह १० बजे से संध्या ५.३० बजे तक खुला रहेगा, यहाँ पर एक सुन्दर पुस्तकालय की व्यवस्था के साथ इन्डोर गेम्स जैसे केरम, तास-पत्ता, चेस आदि की व्यवस्था हैं। बुजुर्ग आपस में बतियाते हुए अपना समय बिता सकते है। हफ्ते में एक बार योग, ध्यान, स्वाध्याय, संगीत, प्रस्तुति आदि प्रोग्राम किये जायेंगे। काफी-चाय की व्यवस्था के साथ जरूरतानुसार खाने की व्यवस्था भी की जायेगी।

सेन्टर में पधारकर बुजुर्गो से मिलें स्थापित की है, उनके जीवन के क्षणों को सुखमय सार्थकमय बनायें। आप उनसे उनके अनुभवों से अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते है। जैनों ने भारत भर में हजारों शिक्षण, स्वास्थ्य संस्थानों कि स्थापना की है, वे भी वर्तमान में जैनों के लिए सहायता करते हैं। वर्तमान में और भी जरूरत है अपने कमजोर भाई का उत्थान कैसे हो, जैसी सोच के संवर्धन की। शिक्षण एवम् स्वास्थ्य संस्थान व्यवसायिक नहीं बल्कि सहयोग के लिए बनाये गए हैं। कृपया चिन्तन मनन करें। जैन-जैन के सहयोगी बनें। प्लैटिनम भावांजलि फाउंडेशन, नंबर-२४, रेंगनाथ एवेन्यू, सिलवन लॉज कॉलोनी, जैन मंदिर के पास, किलपॉक। **- सुगालचन्द जैन, चेन्नई**

भरत बाहुबली पाषाण आगमन भव्य स्वागत

चिकलठाणा: नासिक जिले के चांदवाड तहसील के मालसाने ग्राम में राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य देवनंदी जी के सानिध्य में 'णमोकार तीर्थ' का निर्माण महाकार्य चालू है। भरत बाहुबली मूर्ति निर्माण के लिए बेंगलुरु से ३१ फीट ऊंचे दो महापाषाण भारी ट्राली से मालसाने लाया गया। उस्मानाबाद, बीड, गेवराई, औरंगाबाद, नांदगांव, कोपरगांव, एवला, मालगांव, मालसाने होते हुए पहुंची, जगह जगह पर जैन समाज द्वारा मूर्ति का भव्य स्वागत किया गया। **- एम.सी. जैन**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

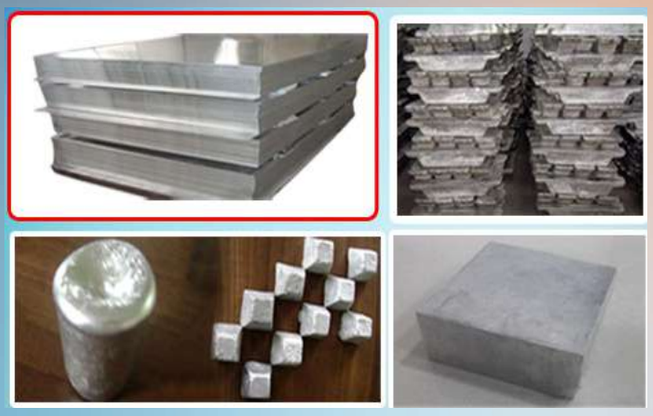

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेगें INDIA नहीं

निर्मल छल्लाणी
अध्यक्ष तेरापंथ सभा गांधीनगर दिल्ली
गंगा शहर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८७३१०१०३१

निर्मल जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के व्यक्तित्व की व्याख्या शब्दों में करना कठिन है, आप महान और त्यागी संत हैं, आपका आभामंडल ही ऐसा है कि हर कोई आपसे प्रभावित हो जाए, आपसे हमेशा सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। आचार्य श्री ने अपनी पदयात्रा के माध्यम से अहिंसा, नशा मुक्ति और नैतिकता का संदेश जन-जन तक पहुंचाया है, जिसका अनुसरण करने वालों के लिए यह संदेश किसी वरदान से कम नहीं, उनके दर्शन और आशीर्वचनों का लाभ हमें सदा मिलता रहे, यही मंगल कामना करते हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने समाज में 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है, तभी हमारे धर्म और समाज का वर्चस्व बढ़ेगा और इसके लिए प्रयास किए जाने चाहिए। 'जीतो' द्वारा 'णमोकार महामंत्र' दिवस ९ अप्रैल को पूरे विश्व में जैन समाज द्वारा मनाया गया, जो इस प्रयासों में से एक है, ऐसे प्रयासों के माध्यम से ही हम 'जैन एकता' अभियान को सफल कर सकते हैं। २०२७ में दिल्ली में आचार्य श्री महाश्रमण जी का चातुर्मास आयोजित है, इसका उद्देश्य भी 'जैन एकता' ही है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति जागरूक हो रही है उन्हें बस उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत', इंडिया नाम तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है, हमारी वास्तविक पहचान 'भारत' से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

निर्मल जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'गंगाशहर' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले २७ सालों से आप 'दिल्ली' में बसे हैं और रेडीमेड गारमेंट के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। दिल्ली के गांधीनगर स्थित तेरापंथ सभा के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शाखा प्रमुख भी रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत! **- जिनागम**

डॉ विजय सिंह बैद
पल्मोनोलॉजिस्ट
भादरा निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३१०८२०८४

डॉ विजय सिंह जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री एक महान संत हैं। वे एक महान दार्शनिक, विचारक, लेखक एवं अहिंसा के प्रचारक हैं, उनका संपूर्ण जीवन आध्यात्मिक साधना के लिए समर्पित है, देश और समाज में नैतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं, उनका सरल और सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है, उनका सानिध्य हमेशा प्राप्त होता रहे, इसी मंगल कामना के साथ उनके जन्म दिवस पर कोटि-कोटि वंदन....

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' आज हमारे समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, इसके लिए सर्वप्रथम हमें उपजाति के स्थान पर 'जैन' शब्द का उपयोग करना चाहिए और नाम के साथ 'जैन' शब्द अवश्य लगाना चाहिए, सभी जैन त्योहारों को एकसाथ मनाना चाहिए, सभी जैन संप्रदायों के आचार्य और गुरु भगवंतों के प्रवचन को सुनना चाहिए, हर क्षेत्र में सभी संप्रदायों और संतों का 'जैन मिलन' कार्यक्रम होना चाहिए, सभी में यह विश्वास जगाना होगा कि हम तीर्थंकर महावीर के अनुयाई हैं और उन्हीं के अनुशासन का पालन कर रहे हैं।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से कुछ जुड़ा है और कुछ भटक भी गए हैं, उसका कारण घर-परिवार से उन्हें वह संस्कार नहीं मिल पा रहे जो मिलने चाहिए, युवाओं को नवकार मंत्र व मंगल पाठ का अध्ययन अवश्य कराना चाहिए, तभी युवा वर्ग अपने धर्म व समाज से जुड़े रहेंगे।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत', इस राष्ट्रीय अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं, इंडिया विदेशियों द्वारा थोपा गया नाम है, हमारी पहचान 'भारत' से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

विजय सिंह जी मूलत: राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में स्थित 'भादरा' के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'भादरा' में ही संपन्न हुई है, तत्पश्चात की शिक्षा आपने 'कोलकाता' से ग्रहण की और चिकित्सीय शिक्षा आपने बीकानेर कॉलेज से ग्रहण की है। वर्तमान में आप कोलकाता में पल्मोनोलॉजिस्ट डॉक्टर के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही आप यथासंभव सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते है, आपके परिवार के सभी सदस्य तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम से जुड़े हैं। जय भारत! **- जिनागम**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

राजेश कुमार कोचर

व्यवसायी व समाजसेवी

गंगाशहर निवासी-दिल्ली प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९३१०१४२०४१

राजेश जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें आचार्य श्री महाश्रमण जी बहुत ही सरल व महातपस्वी संत हैं, उन्होंने संपूर्ण संघ को एक सूत्रों में बांध के रखा है, आप अहिंसा, नशा मुक्ति और नैतिकता को लेकर जो पदयात्रा कर रहे हैं, पूर्व में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी और आचार्य श्री तुलसी जी ने भी की थी, जो हर समय प्रासंगिक रही है और आज के समय में इसकी प्रासंगिकता और बढ़ गई है, आज जिस तरह समाज का नैतिक पतन हो रहा है, उसे रोकने के लिए अहिंसा, नैतिकता और नशा मुक्ति जैसे आयाम की बहुत जरूरत है। आचार्य श्री तुलसी और महाप्रज्ञ जी द्वारा दिए गए अणुव्रत के सिद्धांतों को आचार्य श्री महाश्रमण जी ने निरंतर आगे बढ़ाया है, संपूर्ण तेरापंथ संघ उनके लिए समर्पित है, उनकी हर वाणी शिरोधार्य है, उनके आशीर्वचन हमेशा प्राप्त होता रहे, यही मंगल कामना करता हूं। मानव जाति के कल्याण हेतु उनकी कर्मठता व योगदान के कारण उनके प्रति में श्रद्धावन्त हूँ।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि वैसे देखा जाए तो जब एक परिवार के पांच भाइयों में कालांतर में विचार व व्यवस्थाएं अलग-अलग हो जाती हैं, लेकिन सभी भाईयों में प्रेम और एकता बनी रहती है, उसी प्रकार 'जैन एकता' एक ऐसा सूत्र है, जिसमें जितने भी संप्रदाय और पंथ हैं, सभी के मूल में तीर्थंकर के सिद्धांत हैं, सभी अपनी-अपनी पूजा पद्धति को अपनाते हुए, सभी एक दूसरे के विचारों को सम्मान दें, जिससे संपूर्ण जैन पंथों में एकता स्थापित हो, अपनी नैतिकता, प्रामाणिकता, धार्मिक सिद्धांतों को आगे बढायें, तभी 'जैन एकता' सार्थक व प्रभावी हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से भी विमुख होती जा रही है, इसका कारण एकल परिवार और सम्यक दृष्टिकोण के अभाव में युवा वर्ग का अपने धर्म और समाज के प्रति कोई लगाव नहीं रहा, उनमें संस्कारों का संप्रेषण नहीं होने के कारण ही युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से दूर ही रहता है। आज की युवा पीढ़ी भोग विलासिता की ओर अधिक बढ़ रही है, कारण माता-पिता दोनों ही नौकरी करते हैं या अन्य गतिविधियों में व्यस्त रहते है, उनके पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं रहता तो उन्हें संस्कार कैसे प्राप्त होगें, इसी कारण युवा वर्ग अपने संस्कारों से दूर होता जा रहा है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' हमारे देश का प्राचीन और ऐतिहासिक नाम है, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा, अतः हमारे देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

राजेश जी मूलतः राजस्थान के 'बीकानेर' जिले में स्थित 'गंगाशहर' के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'गंगाशहर' में संपन्न हुई, तत्पश्चात आपने उच्च शिक्षा आसाम व आंध्रप्रदेश में प्राप्त की। २००७ से २०१९ तक दिल्ली में ट्रांसपोर्ट के कारोबार से जुड़े रहे हैं, वर्तमान में 'गुवाहाटी' आसाम में रहते हैं। दिल्ली तेरापंथ सभा के सदस्य हैं। जय भारत!

- जिनागम

राकेश कुमार छाजेड़

व्यवसायी व समाजसेवी

गंगाशहर निवासी-दिल्ली प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८९९०६४१७२

राकेश जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्मदिन पर वंदन करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री बहुत ही शांत और सरल स्वभाव के हैं, उनके प्रत्येक काम में संयम देखने को मिलता है, उनके प्रत्येक प्रवचन समाज कल्याण व 'भारत' हित के लिए होते हैं, उनके वचन से हमें जीवन में बहुत कुछ सीखने को मिलता है, उन्होंने अपनी 'अहिंसा यात्रा' के माध्यम से जन-जन तक अहिंसा, नशा मुक्ति और नैतिकता का संदेश फैलाया है और आज इसका पालन भी हो रहा है, उनका आशीर्वाद हम सभी पर हमेशा बना रहे, यही मनोकामना करते हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' तो जरूरी है पर हमारा समाज पंथ और संप्रदाय में बंटा है और हर संप्रदाय की अपनी मान्यताएं व पद्धतियां है, जिसे छोड़ना नहीं चाहते पर यह भी जरूरी है कि जैन समाज के जरूरतमंदों की सहायता करना, तभी हम समाज में समानता ला सकते हैं, गुरु भगवंतों को भी इस दिशा में प्रयास करने की विशेष आवश्यकता है पर लोग गुरुओं के पास भले ही जाते हैं पर उनकी बातों का अनुसरण कम ही कर पाते हैं, आधुनिक जीवन शैली में बंधे हैं।

आज की युवा पीढ़ी अवश्य ही अपने धर्म समाज से जुड़ी है बस उन्हें उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम, एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

राकेश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'गंगाशहर' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा 'गंगाशहर' में ही संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से दिल्ली में बसे हैं, यहां आप कंप्यूटर व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। दिल्ली तेरापंथ सभा के सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सिद्धार्थ पारख
पूर्व सचिव तेरापंथ सभा बोकारो
चूरू निवासी-बोकारो प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३११२७१८०

सिद्धार्थ जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी सुंदरता उनकी पारदर्शिता है, जब भी उनके दर्शन के लिए जाना होता है उनका सानिध्य अवश्य प्राप्त होता है, उनके आशीर्वचन मिलते हैं, उनका तेज हमारे भीतर सकारात्मक ऊर्जा निर्माण कर देता है, उनके शांतचित्त को देखकर मन को भी शांति प्राप्त होती है, उनके चरणों में जाकर सारा कष्ट दूर हो जाता है जो भी दोष, कुप्रभाव और दुविधा मन में रहती है वह समाप्त हो जाती है, उन्होंने समाज उत्थान के लिए अहिंसा, नशा मुक्ति और नैतिकता का संदेश दिया है, जो आज के समय में बहुत ही सार्थक है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण कश्मीर के 'पहलगाम' में हुई घटना है जो इसे चरित्रार्थ करती है, यदि अहिंसा मार्ग अपनाया जाए तो विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। 'भारत' का एक राज्य 'पंजाब' पुरा नशे की चपेट में आ चुका है, जो एक समय सबसे अधिक कृषि उपज वाला क्षेत्र कहा जाता था, आज इसका स्तर दिन प्रतिदिन कम होते जा रहा है, क्योंकि पंजाब की युवा पीढ़ी पूरी तरह से नशे के चपेट में अग्रसर है। आचार्य श्री की प्रेरणा से हजारों लोगों ने नशा मुक्ति को अपनाया है और अपना भी रहे हैं, अपने जीवन को कल्याण मार्ग पर लगा रहे हैं, हमें गर्व है कि हमें ऐसे आचार्य श्री के सानिध्य का अवसर प्राप्त हो रहा है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि जैन समाज कई पंथ और संप्रदायों में बंटा हुआ है पर सभी के मूल एक ही हैं, विचारधाराएं अलग-अलग हैं, महावीर तक सभी एक ही थे, पर समय-समय पर ज्ञानी संत हुए, जिनकी विचारधारा व ज्ञान अलग-अलग हुए, कालांतर में यही अलग-अलग विचारधाराओं ने 'पंथ' का रूप ले लिया, जैन धर्म पर आधारित सभी अलग-अलग पंथों के वैचारिक दृष्टिकोण अलग-अलग हैं पर सभी मूल में एक ही हैं। हमारा 'णमोकार मंत्र' एक है, सभी पार्श्वनाथ शिखरजी और पालीताणा जैसे तीर्थ के दर्शन के लिए जाते हैं, अतः हमें 'एक' होना चाहिए। 'महावीर जन्म कल्याणक' सभी संप्रदायों द्वारा मिलकर मनाया जाए, जिससे हमारे भीतर तो एकता का निर्माण होगा, साथ ही अन्य समाज के सम्मुख भी हमारी एकता का संदेश जाएगा, इसीलिए 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से पहले की अपेक्षा अधिक समर्पित है, बस उन्हें उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है, परंपरागत रूढ़िवादिता को दूर कर, उसमें सुधार कर, युवाओं को अधिक से अधिक जोड़ने का प्रयास किया जाए। आज की युवा पीढ़ी तार्किकता और विज्ञान को महत्व देती है, उन्हें विज्ञान पर आधारित जैन सिद्धांतों को समझाया जाए तब वह अवश्य अपने धर्म समाज से जुड़ेंगे।

सिद्धार्थ जी मूलतः राजस्थान स्थित 'चूरू' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'बोकारो' में संपन्न हुई है, यहां आप स्टील मैन्युफैक्चरिंग व मिनरल वाटर प्लांट से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ सभा बोकारो के सदस्य हैं, पूर्व में सचिव रहे हैं, वर्तमान में कार्यकारिणी सदस्य हैं। चातुर्मास व्यवस्थापन सचिव भी रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल हमारे देश का मूल नाम तो 'भारत' ही है, जो चक्रवर्ती राजा भरत के नाम से है, इंडिया तो अंग्रेजों के वैचारिक नाम है जो हम पर थोपा गया है, हमारी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान 'भारत' है, अंत: हर हाल में हमारे देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। जय भारत! **- जिनागम**

डॉ सुमित जैन
ऑर्थोपेडिक सर्जन
गंगाशहर निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३३०४३५३७८

सुमित जी आचार्य श्री के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री की धर्म के प्रति निष्ठा, समाज के प्रति एकाग्रता, संघ के प्रति समर्पण सबसे बड़ी विशेषता है, इसके माध्यम से ही उन्होंने संघ को एकसूत्र में बांध कर रखा है, उनके आशीर्वचन प्राप्त करने पर जीवन जीने की एक नई प्रेरणा मिलती है, उनका आशीर्वचन हमेशा प्राप्त होता रहे यही मंगल कामना करता हूँ।

'जैन एकता' जैन समाज के लिए बहुत जरूरी है, हमारी संख्या वैसे भी कम है, यदि हम ऐसे ही पंथों में बंटे रहेंगे भी तो समाज में 'एकता' कैसे स्थापित होगी। 'एकता' स्थापित करने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। 'एकता' स्थापित होने पर हमारा समाज विकास की गति की ओर बढ़ेगा, इसीलिए समाज में 'एकता' होना जरूरी है। समाज में एकता रहेगी तो इसका लाभ छोटे बड़े सभी वर्गों को प्राप्त होगा, इसीलिए एकता बहुत जरूरी है, जिस तरह 'जीतो' द्वारा नवकार दिवस मनाया गया पूरे विश्व में, इसी तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से हम 'जैन एकता' स्थापित करने का प्रयास कर सकते हैं।

भारत को 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम और पहचान केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

सुमित जी मूलतः राजस्थान स्थित 'गंगा शहर' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'कोलकाता' में संपन्न हुई है, यहां आप ऑर्थोपेडिक डॉक्टर के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही यथासंभव धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र से भी जुड़े हैं। जय भारत! **- जिनागम**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अर्जुन लाल बाफना
अध्यक्ष तेरापंथ सभा अहमदाबाद
भीलवाड़ा निवासी-अहमदाबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७६११३४१५

अर्जुनलाल जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि व्यसनमुक्ति, जीवन विज्ञान और मानव एकता के लिए आचार्य श्री सतत प्रयत्नशील है। जैनिजम जीवन जीने की एक कला है, जो इसका पालन करता है वह वास्तविक रूप से 'जैन' कहलाता है। आचार्य श्री महाश्रमण जी अपने विहार के माध्यम से जन-जन में नशा मुक्ति का संदेश फैला रहे हैं, जिसका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है। आचार्य श्री की सबसे बड़ी विशेषता अनुशासन और विनयशीलता है, वे एक योगी पुरुष की भांति मर्यादा में रहकर संघ व समाज का संचालन कर रहे हैं, यह हमारा सौभाग्य है कि २०२५ में आचार्य श्री का चौमासा अहमदाबाद में होने जा रहा है यह हमारे लिए गर्व का विषय है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि पूरे विश्व में जैन समाज की जनसंख्या लगभग एक करोड़ के करीब है, पंथों में बंटने से हमारी जनसंख्या संप्रदायों में बंटी हुई है, जिससे हमारी जनसंख्या का वास्तविक पता चल ही नहीं पाता, जबकि आर्थिक रूप में सबसे अधिक टैक्स भरने वालों में जैन समाज की संख्या है। नैतिक आचरण के लिए जैन समाज सबसे अधिक जाना जाता है, हमारा णमोकार मंत्र एक है, फिर इतने पंथ क्यों? अपने धर्म और समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जैन समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी पहले की अपेक्षा धीरे-धीरे अपने धर्म और समाज के प्रति सजग हो रही है, वह तपस्या भी करती है वह जैनिजम को समझ भी रही है, उसमें रुचि भी ले रही है, उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो वे धर्म और समाज से जुड़ें रहेगें।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम और पहचान 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भारत' हमारे देश की वास्तविक पहचान है, भरत बाहुबली के नाम से इस भूखंड का नाम भारत पड़ा है।

अर्जुनलाल जी मूलतः राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में 'बोरियापुरा' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले ४८ सालों से अहमदाबाद में बसे हुए हैं। केमिकल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, 'जीतो' के सदस्य है। तेरापंथ सभा अहमदाबाद के अध्यक्ष और मेवाड़ संघ के ट्रस्टी के पद पर सक्रिय हैं। जय भारत!

- जिनागम

गजेंद्र कुमार जैन (कोठारी)
व्यवसायी
बड़ी खाटू निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ८५८८८२१४८१

गजेंद्र जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री बहुत ही सरल सौम्य और मधुर स्वभाव के हैं, हमारा यह सौभाग्य रहा कि राजस्थान में हमारे घर पर आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ और वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी का आगमन हुआ, उनके सानिध्य का अवसर हमें प्राप्त हुआ। आचार्य श्री अपने श्रावकों की छोटी से छोटी बात को बड़े ध्यान से सुनते और उनकी समस्याओं का मार्ग बताते हैं, ऐसे आचार्य विरले ही होते हैं, उन्होंने समाज कल्याण के लिए अहिंसा यात्रा के माध्यम से नैतिकता और नशा मुक्ति का संदेश जन जन तक फैलाया है, यह हमारा सौभाग्य है कि उनके दर्शन का लाभ हमें कई बार प्राप्त हुआ है और हर बार एक नई चेतना जागी है, उनका सानिध्य हमेशा प्राप्त होता रहे, यही मंगल कामना करते हैं। उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि इच्छा शक्ति हो तो हर कार्य संभव हो सकता है, आज हमारे समाज में 'जैन एकता' की बहुत जरूरत है, समाज पंथों में विखरा होने के कारण समाज पर कई संकट आए, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मुंबई में जैन मंदिर की घटना है, यदि अपने अस्तित्व को बनाए रखना है, तो समाज को एकत्रित होना होगा, तभी धर्म और समाज की रक्षा हो सकेगी।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी हुई है और विमुख भी हो रही है, बड़े शहरों में देखा जा रहा है कि ८०% युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से दूर हो रहे हैं, अपने आधुनिक जीवन शैली में रंगे हुए हैं, मात्र २०% युवा वर्ग ही है जो अपने धर्म और समाज से जुड़े हैं, यदि यही स्थिति रही तो हमारा भविष्य खतरे में है कहा जा सकता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' हमारे देश का प्राचीन और वास्तविक नाम है, निश्चित रूप से हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, पर विदेश में 'भारत' को लोग इंडिया नाम से अधिक जानते हैं, उनके मन में इंडिया की वही छवि है जो हम 'भारत' की छवि में देखते हैं, नाम का सम्मान होता है, यदि हमारे देश को हम 'भारत' कहते हैं तो विश्व को भी 'भारत' ही कहना चाहिए INDIA नहीं।

गजेंद्र जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बड़ी खाटू' के निवासी हैं। आपका जन्म और शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। १९९१ से आप 'गुड़गाँव' में बसे हैं और मार्बल ग्रेनाइट के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। दिल्ली तेरापंथ सभा के सदस्य हैं, आपके पिताजी स्व. खिंवसिंह जी एक श्रद्धानिष्ठ श्रावक थे, वे हमेशा धार्मिक और सामाजिक कार्य के लिए सक्रिय रहते थे। जय भारत!

- जिनागम

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

सुरेश जैन कोठारी
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पुलक मंच
उदयपुर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६९४६४१६१

सुरेश जी आचार्य श्री पुलक सागर जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री राष्ट्रसंत हैं, जिन्हें भारत सरकार द्वारा शांति दूत और 'भारत गौरव' की उपाधि दी गई है, उन्होंने जो शास्त्र लिखा उसके आधार पर भारत सरकार द्वारा उन्हें उपाधि प्राप्त हुयी है, वे जन-जन के गुरु हैं, ना सिर्फ जैन समाज दूसरे समाज के लोग भी उन्हें मानते हैं, उनके आदर्शों को अपनाने का प्रयास करते हैं। आचार्य श्री के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है, उनके जन्म दिवस पर कोटि-कोटि वंदन....

'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जैन समाज को अल्पसंख्यक घोषित किया गया है, पर अल्पसंख्यक समाज का जो लाभ हमें मिलना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा है, इसका कारण यही है कि हम सब बिखरे हुए हैं। आज हमारा समाज दिगम्बर, श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तपागच्छ, खरतररगच्छ जैसे पंथों में विभक्त है, जिससे हमारी वास्तविक संख्या का पता नहीं चल पाता साथ ही हम अपने नाम के साथ 'जैन' नहीं लगाते, यदि हम अपनी जाति में 'जैन' लिखें, तो हमारी वास्तविक संख्या का पता चलेगा। 'जैन एकता' स्थापित होगी, तभी हमारे धर्म और समाज का वर्चस्व बढ़ेगा, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण ९ अप्रैल को पूरे विश्व में 'जीतो' द्वारा नवकार दिवस के रूप में मनाया गया, जिसका बहुत ही सकारात्मक परिणाम समाज पर पड़ा है, ऐसे ही प्रयासों से हम 'जैन एकता' स्थापित कर सकते हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति जागरुक है, समाज द्वारा पाठशालाएं चलाई जाती हैं, जिसमें बच्चों को जैन धर्म से जुड़े संस्कार व शिक्षाएं प्रदान की जाती है, जिससे उनमें जैन धर्म और समाज को समझने की जिज्ञासा निर्माण होती है, 'जिनशरणं' एक ऐसी संस्था है, जहां वर्तमान में ५० बच्चे निःशुल्क शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, जिन्हें जैन धर्म से संबंधित सारी बातों की शिक्षा दी जाती है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ जी के पुत्र भरत चक्रवर्ती से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा। इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है, जब उन्होंने हम पर शासन किया था तो INDIA नाम रख दिया था, अब वे चले गए तो उनके दिए हुए नाम को हम क्यों अपना रहे हैं? हमारे देश का वास्तविक नाम 'भारत' है और 'भारत' ही रहना चाहिए।

सुरेश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'उदयपुर' के निवासी हैं। आपका जन्म उदयपुर से ५० किलोमीटर दूर स्थित 'परसाद' और संपूर्ण शिक्षा 'केसरिया जी' में संपन्न हुई है। पिछले ५२ सालों से आप 'मुंबई' में बसे हैं और कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। कांदिवली चारकोप में मंदिर निर्माण का शिलान्यास आपके हाथों हुआ और आचार्य भगवंत पुलक सागर जी के सानिध्य में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव में सुधर्मा इंद्र बनने का सौभाग्य मिला, उस पंचकल्याणक के अध्यक्ष भी रहे। 'जिनशरणं' संस्थान के कोषाध्यक्ष व ट्रस्टी के पद पर कार्यरत हैं। पुलक मंच के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष हैं, 'जिनशरणं' में आयोजित पंचकल्याणक के कोषाध्यक्ष रहे। जैन ग्लोबल महासभा के पैटर्न मेंबर हैं, अन्य कई सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। २०१९ में राजस्थान के तत्कालीन गृहमंत्री गुलाब सिंह कटारिया जी द्वारा आपको 'मेवाड़ गौरव' की उपाधि से सम्मानित किया गया है। जय भारत!

- जिनागम

एक प्रेरक कथा

चीन के बादशहा का कृपापात्र था वहां का प्रधान। पर बादशहा का क्या कुपापात्र और अकृपापात्र। राजा बादशहा तो ऐसे होते हैं कि रस्ते चले तो ठीक अन्यथा किन्नी कटते देर नहीं।

ऐसा ही उस प्रधान के साथ हुआ। बादशहा ने देखा कि प्रधान ठिक से काम नहीं कर रहा है। गलती सामने आयी देख उसका प्रधान का पद छीन लिया। प्रधान बिना नानुच के अपने घर चला गया और दूसरे कामों में लग गया। कुछ समय बाद बादशहा को एहसास हुआ कि प्रधान निरपराध है उसे पुन: बुलाना चाहिए। प्रधान को बुलाकर पुन: उसका पद दे दिया। थोड़े दिनों बाद प्रधान की छोटी सी गलती देख बादशहा पुन: नाराज हो गया और उसे दुबारा अपने पद से मुक्त कर दिया गया। प्रधान उसी अवस्था में पुन: अपने घर लौट आया। कहते हैं इस प्रकार अनेक बार पद से उतारा गया फिर भी उसके चेहरे पर दुख की रेखा नहीं देखी गयी। मारवाड़ी में कहावत है- सावन सुखो न भादवो हरयो अर्थात न सावन सुखा और न भादवा हरा, उसे प्रधान का पद दिया तो कोई खुशी नहीं और पद छीना तो भी कोई दुख नहीं, उसके जीने में कोई फर्क नहीं आया। सदा प्रसन्नता और मुस्कान देखकर बादशहा को ताज्जुब हुआ उसने प्रधान से साश्चर्य पूछा कि एक बार भी यदि आदमी का अवमूल्यन हो जाता है तो वह अधमरा हो जाता है जबकि तुम्हारा अपमान एक बार नहीं अनेक बार किया गया। फिर भी तुम खुश हो, क्या कारण है?

प्रधान बोला जहांपनाह कोई बड़ी बात नहीं है। आपने मुझे प्रधान बनाया तो मैंने सोचा यह आप द्वारा दिया गया सम्मान है, इसे ठुकराना नहीं, स्वीकार कर लेना चाहिए, और जब पदमुक्त किया गया तो मैंने सोचा अभी मेरी सेवा की अपेक्षा नहीं है अत: घर लौट जाना चाहिए। मेरे लिए दोनों ही सुखद अवसर थे, मैं क्यों व्यर्थ दुखी बनता।

- विजयराज सुराणा
९८६८८०७६८३

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जैन धरोहर दिवस मुंबई में मनाया गया

मुंबई: श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा नई दिल्ली, सेठी ट्रस्ट एवं श्री दिगम्बर जैन समाज, मुंबई के संयुक्त तत्वावधान में जैन धरोहर दिवस-२०२५ का आयोजन किया गया। विले पार्ले (पश्चिम) एनएम कॉलेज के पास स्थित मुकेश पटेल ऑडिटोरियम में हुए कार्यक्रम में जैन धर्म से जुड़े सैकड़ो लोग उपस्थित हुए। स्व. निर्मल कुमार सेठी की स्मृति में आयोजित इस दिवस पर उनके जैन धर्म के प्रचार प्रसार और महिला उत्थान में अतुलनीय योगदान को याद किया गया। सेठी जी ने अपने जीवन में ४० देशों का भ्रमण कर जैन धरोहरों का अध्ययन और उनके संरक्षण का कार्य किया था, उनकी स्मृति में यह आयोजन जैन विरासत के प्रति सामाजिक जागरूकता का प्रतीक बना। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा, पूर्व विधायक गीता जैन आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम में भक्ति गीत प्रस्तुत किए गए :

धरोहर दिवस के संयोजक देवेंद्र ब्रह्मचारी ने कहा कि जैन धरोहर न केवल हमारी सांस्कृतिक पहचान है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के लिए शांति और सद्भाव का संदेश देती है। कार्यक्रम में जैन संस्कृति, सिद्धांतों और धर्म के प्रचार के प्रति युवाओं में जागरूकता लाने के उद्देश्य से सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, भक्ति गीत और नाट्य प्रस्तुत किए गए, कार्यक्रम का समापन 'मंगल पाठ' और विश्व शांति की कामना के साथ हुआ, इस आयोजन ने जैन समाज को अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संजोने और उसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का संकल्प दिलाया।

दौलताबाद किले पर जैन गुफा प्राप्त

चिकलठाणा, महाराष्ट्र: महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर से १२ किलोमीटर दूरी पर यादव कालीन ६०० वर्ष पूर्व 'दौलताबाद' किला महाराष्ट्र का ऐतिहासिक वैभव है। हाल ही में 'दौलताबाद' किला आगजनी के कारण क्षतिग्रस्त हुआ, चारों तरफ अत्यधिक घास बढ़ने से और समय पर कटाई न होने से आगजनी के उग्र स्वरूप के कारण दुर्ग को हानि पहुंचना स्वाभाविक था। 'दौलताबाद' को देवगिरी भी कहा जाता है, आग बुझाते समय तथा सफाई करते समय 'दौलताबाद' किले के पास जैन गुफा मिली है, यहां प्राप्त महाकाय मूर्तियां तीर्थंकरों की है, ऐसा जैन समाज के कार्यकर्ता वर्धमान पांडे एवं महावीर ठोलिया का कहना है। **- एम.सी. जैन**

जैन एकता' से ही जैन समाज का
विकास व सम्मान बढ़ेगा मिल कर कहें
हम-सब जैन हैं

Laltesh Jain
Mob: 9837044541
B-52, Ganesh Nagar, Firozabad,
Uttar Pradesh, Bharat-283203
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आचार्य श्री पुलकसागर जी के दर्शन का महायोग

चिकलठाणा, महाराष्ट्र: कवि हृदय, महान दिगम्बर जैन, राष्ट्र संत पुलकसागर जी म.सा. का औरंगाबाद में आगमन हुआ, तब अतिशय क्षेत्र कचनेर जी जाते हुए चिकलठाणा के पास एक जगह पर रुके थे। समाजसेवी, पत्रकार, एम.सी. जैन, आचार्यश्री पुलक सागर जी को स्व लिखित पुस्तक भेंट दी, मुनिश्री जी ने कहा यह महान कार्य है। आचार्य पुलक सागर जी कांदिवली मुंबई में थे तब भी दर्शन का योग आया था, इस अवसर पर तत्कालीन जैन अध्यक्ष ॲड. डी.बी. कासलीवाल के साथ अन्य गणमान्य उपस्थित थे। **- एम.सी. जैन**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पाकिस्तान के खिलाफ जैन समाज की सर्वधर्म मौन रैली

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के विरोध में श्री बोरीवली २७ जैन संघ के तत्वावधान में 'सर्वधर्म मौन रैली' का आयोजन किया गया, रैली में भारी संख्या में जैन समाज के साथ ही अन्य सभी धर्म के लोगों ने हिस्सा लिया। आतंकी हमले में मारे गए निर्दोष नागरिकों को मौन होकर भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। सर्वधर्म मौन रैली बोरीवली पश्चिम के जांभली गल्ली, जैन देरासर से शुरू हुई, एस वी रोड से होकर रेलवे स्टेशन, एलटी रोड, टीपी एस रोड होते हुए वीर सावरकर गार्डन के पास मैदान में पहुंची और यहां मौन रैली एक सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। स्नेहल शाह के मार्गदर्शन में श्री बोरीवली २७ जैन संघ की ओर से निकाली गई, रैली में लोगों ने तिरंगा लहराते हुए राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया, इसमें प्रवीण शाह, अमर मेहता, अशोक शाह, नैनेश शाह, बीना दोशी आदि ने रैली को सफल बनाने में कड़ी मेहनत की।

स्नेहल शाह के अनुसार पाकिस्तान के नेता और प्रवक्ता टीवी पर बैठकर झूठी बयानबाजी करते हैं कि जैन समाज के लोग भी भारत में परेशान

हैं, यह सरासर गलत और बेबुनियाद बाते हैं। भारत में जैन समाज के लोग अपने आपको कभी अल्पसंख्यक नहीं मानते, भारत के जैन देश सेवा में हमेशा अपनी मेहनत और लगन से जुटे हैं। भारत की जीडीपी में जैन समाज के लोगों का भी बहुत बड़ा योगदान है। पाकिस्तान आतंकवाद के मुद्दे पर अब बेनकाब हो चुका है, ऐसी झूठी बयानबाजी करके बच नहीं सकता। निर्दोष नागरिकों की निर्मम हत्या करनेवालों को मुंहतोड़ जवाब प्रधान मंत्री मोदी द्वारा दिया जाएगा। रैली में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल थीं।

'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

के. सी. जैन मेडिकल स्टोर्स, चिकलठाणा, अजिंठा मेडिकल एंड एज्युकेशन संस्था
एन-४, सिडको, प्रीति क्लीनिक चिकलठाणा, सौ. हेमलता बाई
एम. पाटनी मेडिकल एंड एज्युकेशन संस्था, प्रीति क्लीनिक एन-३,
एम.सी.जैन, पत्रकार ग्रंथालय जैनगिरी, जटवाड़ा, पाटनी लॉन्स,
केंब्रिज के सामने कचनेरजी रोड, चिकलठाणा
एम.सी. जैन पत्रकार-सौ. हेमलताजी एम. जैन, प्राचार्य डॉ. राजेश एम.पाटनी,
सौ. डॉ. स्नेहल आर. पाटनी, दिनेश एम.पाटनी, सौ. मंजूषा डी. पाटनी,
डॉ. प्रीती.आ. टदैया (बी.डी.एस., एम.डी.एस.), डॉ. नीलम (एम.डी.) औरंगाबाद
प्रीतेश आर. पाटनी, प्रतीक डी. पाटनी चिकलठाणा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत-४३१००३

!! ॐ अर्हम् !!

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य श्री महाश्रमण जी के ६४वें जन्म वर्ष पर
कोटि-कोटि वंदन

अर्जुनलाल बाफना अध्यक्ष
पवन कोठारी कोषाध्यक्ष
विकास पितलिया मंत्री

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा अहमदाबाद

Terapanth Sabha sahibag, Terapanth Bhavan,
Ahmedabad, Gujarat- 380004 Mob.: 93761 13415

छत्तीसगढ़ - रायपुर दिगम्बर जैन समाज हुआ गौरवान्वित

रायपुरः बड़े ही गर्व व खुशी की बात है कि २७ अप्रैल २०२५ को आदरणीय स्व. श्री निर्मल कुमार जी सेठी की चतुर्थ पुण्यतिथि जैन धरोहर दिवस के रूप में पूरे देश में मनाई गयी, जिसके अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित हुए, उसमें रायपुर को सर्वश्रेष्ठ शहर का सम्मान मिला, जो 'जिनागम' पत्रिका परिवार लिए गर्व एवं खुशी का विषय है, कार्यक्रम के संपादन मे स्थानीय एवं प्रांतीय समाज के प्रमुख लोगों के साथ 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, राष्ट्रीय अभियान के आव्हानकर्ता संगठन 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कैलाश रारा की भूमिका प्रमुख रही, उन्हें साधुवाद।

भारत को 'भारत' ही बोलें
आइये हम सब मिलकर इसकी शुरूआत करें
जय भारत

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

• Investment Banking • NBFC • Family Office

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , Web: www.intensivefiscal.com

पधारो म्हारे देश

पहले-मातृभाषा फिर-राष्ट्रभाषा

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

मेरा राजस्थान

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मे भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

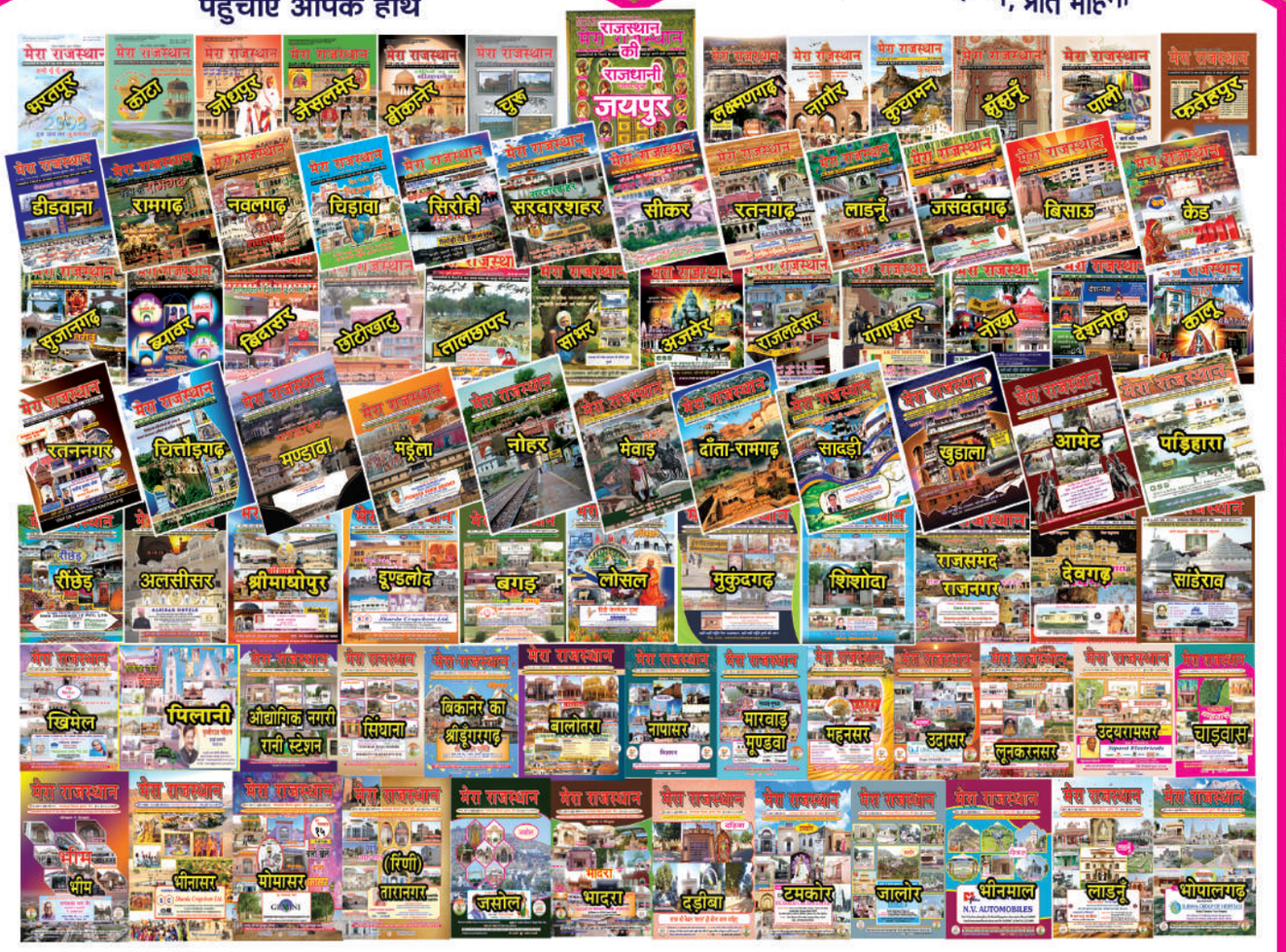

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला

1 प्रति ₹ 100/- **मेड़ता सिटी** 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-28509999

सम्पादक

बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट

विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th May 2025 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S
FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

ONLY ₹50/- PER PC

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598